आर. ए. एन पंजीयन क्रमांक
CHHIN/2017/72506

वर्ष 04 अंक 09 अक्टूबर 2020

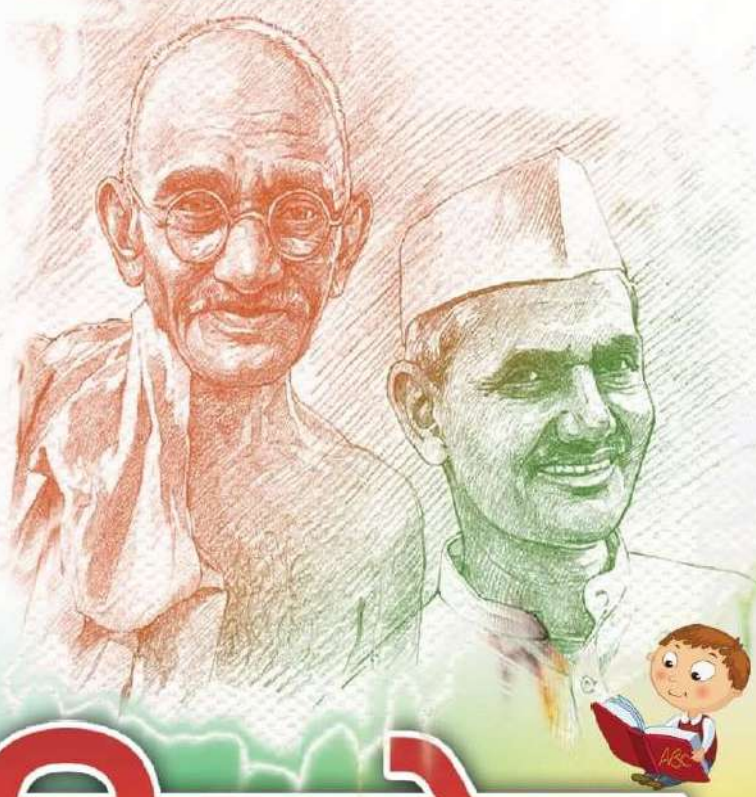

किलोल

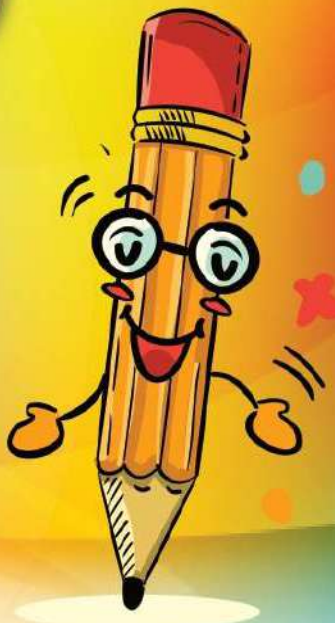

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580 / 1, गली नं.17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर (छ.ग.) 492007
ई-मेल : wings2flysociety@gmail.com

मूल्य 80/-

अनुक्रमाणिका

मोहल्ला क्लास 6

हिंदी भाषा 8

उड़ने की चाह 10

राष्ट्रीय खेल दिवस 11

हमारे पौराणिक पात्र- बालक ध्रुव 13

वह गुरु कहलाता 15

राजा 16

पहेलियाँ 17

गणेश वंदना 19

पढ़ाकू शेर 20

औरत 22

नदियाँ 24

खूब पढ़ाते टीचर जी 26

राष्ट्र भाषा की व्यथा 27

नटखट नन्ही 28

सत्य की जीत 30

पहेलियाँ 32

सांझ सुहानी 35

इंतजार क्यों? 36

समय मत खोना 38

मेरे पापा 40

हमारे प्रेरणास्रोत- लाल बहादुर शास्त्री 41

मुखौटे 43

जंगल की बात 44

खावौ सुग्घर 45

हाथ धुलाई 47

चित्र देख कर कहानी लिखो 49

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी 50

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 51

हाथी मेरे साथी 51

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 52

प्यारी भाषा हिंदी 53

आशा का तू दीप जला 55

सौर ऊर्जा 57

दादा जी 59

जल की कीमत 60

गाँधी बबा 62

राष्ट्रभाषा हिंदी दिवस 63

गुरु शिष्य 65

कविता 67

शिक्षक 68

पञ्चतन्त्र की कथा- चतुर बगुले की कथा 70

कहाँ गया बचपन 73

मेरे पापा 74

पहेलियाँ 75

हिंदी भारत की शान 77

सफलता की कहानी- जहाँ चाह वहाँ राह 79

आना संगी बइठले 81

आत्मनिर्भर बनेगा भारत 82

बढ़ता झरना 84

समय बहुत बलवान 85

मक्का की डाली 86

मित्र को पत्र 88

दार भात केंद्र 95

नदियाँ 97

मेरा परिवार 98

बापू 99

एक कहानी मेरी जुबानी 100
लौट आओ पापा 101
अपना भारत 102
दिन सोमवार 104
रोटी 105
हृदय परिवर्तन 106
भिंडी की सभा 108
मेरा शहर अनोखा शहर 110
नन्हे साहसी बच्चों ने 70 साल की बुजुर्ग की बचाई जान 111
The lion and the Rabbit 113
शिक्षा 114
पैड़ीगुंडा जलप्रपात 116
पानी 117
चटपटे चने 119
हिन्दी 120
रोजी रोटी 122
पढ़ई तुँहर दुवार 124
जीवन के सरगम 125
तितली 127
शिक्षा गीत 128
शाला समुदाय की नई पहल 130
गुड़ 132
A pig and a Man 133
मेरी टीचर 134
पेड़ 135
आओ हिंदी दिवस मनाएँ 137
हमारे बापू 140
कर लें मिल्ला मिल्ली 142
गुरु पद पा जाते शिक्षक 143
बाढ़ 144

रिश्तेदार 146
ठान लिए तो जीत है 147
Rain and Earth 149
महतारी भाखा 150
अधूरी कहानी पूरी करो 151
यशवंत कुमार चौधरी व्दारा पूरी की गई कहानी 153
तेजेश साहू व्दारा पूरी की गई कहानी 154
संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी 155
रिश्ता इंसानियत का 155
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 156
बारिश का वह दिन 156
भाखा जनऊला 158

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, कंचन लता यादव, पुर्णेश डडसेना, कविता आचार्य

ई-पत्रिका एवं आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल

प्यारे बच्चों,

उम्मीद है आप सभी अच्छी तरह ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे होंगे. अपने शिक्षकों और माता-पिता के सहयोग से आप अपना सीखना जारी रखें. किलोल के लिए हमें आपकी रचनाओं का इंतजार रहता है, अत: आप अपनी रचनाएँ हमें भेजते रहें.

इस माह दशहरे का त्यौहार आ रहा है, जो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है. हमें बहुत सावधानी बरतते हुए भीड़-भाड़ से बच कर रहना है, यह ध्यान ज़रूर रखें.

पाठकों से हमारा अनुरोध है कि वह वह हमें यह जरूर बताएँ कि उन्हें किलोल की कौन-कौन सी बातें अच्छी लगती हैं और कौन सी नहीं. इसे और अच्छा बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए.

रचनाकारों से हमारा अनुरोध है कि वे रचनाओं पर थोड़ा और परिश्रम करें, भले ही अपनी कम रचनाएँ हमें भेजें.

इस माह में आने वाले सभी त्योहारों की प्यार भरी शुभकामनाओं के साथ हम पत्रिका का यह अंक आपके हाथों में सौंप रहे हैं.

आपका
आलोक शुक्ला

मोहल्ला क्लास

रचनाकार- स्नेहलता टोप्पो

गली- मुहल्ला, पारा- पारा,
जगमग आस का दीप जले,
ज्ञान भास्कर चमके नभमें,
शिक्षा फिर से फूले-फले.

बुलटू के बोल कहीं पर,
कहीं गूँज है माइक की.
कहीं आभासी कक्षा सुसज्जित,
गूँजगुरूजी के बाइक की.

मिस कॉल करके यह लगता,
जैसे गुरू हों पास खड़े.
ज्ञान भास्कर चमके नभमें,
शिक्षा फिर से फूले-फले.

कोरोना है भीषण संकट,
विकट स्थिति आई है.
वैकल्पिक शिक्षा से भरेगी,
अशिक्षा की खाई है.

लक्ष्य मिलेगा चलता चल,
नव प्रभातविश्वास कहे.
ज्ञान भास्कर चमके नभमें,
शिक्षा फिर से फूले-फले.

संकट चाहे जैसे भी हों,
हार नहीं हम मानेंगे.
नव नीति की नींव बनेंगे,
वक्त नहीं जाने देंगे.

ज्ञान नीर से सींच बाल मन,
पुलकित बाग सुवास बहे.
ज्ञान भास्कर चमके नभ में,
शिक्षा फिर से फूले-फले.

हिंदी भाषा

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'

हिन्दी हिन्दुस्तान की, हृदय समाहित प्राण.
विश्व हितैषी भाष यह, हितकर सबकी त्राण..
हितकर सबकी त्राण, नागरी लिपि हिय भाती.
हमाहमी से दूर, भाव सम वक्ष बहाती..
कहे अमित कविराज, भारती की यह बिन्दी.
हर्षित हिन्द विशेष, हितावह हीरक हिन्दी..

भाषा भारत वर्ष की, हिन्दी इसकी भाष.
मेल कराती एक यह, भारतीय अहसास..
भारतीय अहसास, हृदय को सबकी भाती.
कहनी सुननी बात, सार झट यह समझाती..
कहे अमित अनुनीत, पूर्ण करती अभिलाषा.
संप्रेषण साकार, देशहित हिन्दी भाषा..

समता समुचित सादगी, समचर सद् समवेत.
समीकरण सम्मति सहित, संविधान समुपेत..
संविधान समुपेत, समाहित सबकी आशा.
संरक्षक संस्कार, सभोचित हिन्दी भाषा..
कहे अमित अख्यात, सबल है इसकी क्षमता.
मनोनीत यह भाष, समर्पित समुदित समता..

उड़ने की चाह

रचनाकार- उषा साहू

माँ मेरा मन करता है स्कूल,
मैं भी पढ़ने-लिखने जाऊँ.
सभी दोस्तों के संग खेलूँ,
खूब पढ़-लिखकर दिखलाऊँ.

माँ मेरा मन करता है,
कोरोनाको दूर भगाऊँ.
बस में बैठ कर मामा,
के घर मैं जाऊँ,
नानी के हाथ का खीर खाऊँ.

माँ मेरा मन करता है,
पंछी बन जाऊँ.
आसमान में उड़ते हुए,
अपने अरमानों का पंख फैलाऊँ.

राष्ट्रीय खेल दिवस

रचनाकार- अविनाश तिवारी

जीवन भी एक खेल है,
हम सब बने शतरंज.
कोई इसमें है खिलाड़ी,
कोई है अनाड़ी..

खेल भावना जीत दिलाती,
मुश्किल से न घबराएँ.
कर सहयोग एक-दूजे का,
राह आसान बनाए..

खेल रखे निरोग शरीर,
जिंदगी पाठ पढ़ाती है.
क्या हार, क्या जीत है,
सबको सबक सिखाती है..

हाकी के जादूगर तुमने,
हिंदुस्तान का मान बढ़ाया है.
ध्यानचंद को श्रद्धांजलि देने,
सही समय अब आया है..

देकर भारत रत्न मेजर को,
खेल का हम सम्मान करें,
जीत सदा सत्य की हो,
भारत की जय-जयकार करें.

हमारे पौराणिक पात्र- बालक ध्रुव

पुराणों में ऐसी अनेक कहानियाँ हैं, जो सांकेतिक रूप से हमें जीवन में सफलता के सूत्र बताती है. आज हम विष्णु पुराण से बालक ध्रुव की कथा आपको बता रहे हैं.

राजा उत्तानपाद की सुनीति और सुरुचि नामक दो रानियाँ थीं. राजा उत्तानपाद के सुनीति से ध्रुव तथा सुरुचि से उत्तम नामक पुत्र हुए. सुनीति बडी रानी थी किंतु राजा उत्तानपाद का प्रेम सुरुचि के प्रति अधिक था. एक बार राजा उत्तानपाद ध्रुव को गोद में लिए बैठे थे तभी छोटी रानी सुरुचि वहाँ आई.ध्रुव को राजा की गोद में बैठा देख कर वह ईर्ष्या से जल उठी. झपटकर उसने ध्रुव को राजा की गोद से खींच लिया और अपने पुत्र उत्तम को उनकी गोद में बिठाते हुए ध्रुव से कहा, 'रे मूर्ख! राजा की गोद में वही बालक बैठ सकता है जो मेरी कोख से उत्पन्न हुआ है. तू मेरी कोख से उत्पन्न नहीं हुआ है इस कारण तुझे राजा की गोद में तथा राजसिंहासन पर बैठने का अधिकार नहीं है. जब तू मेरे गर्भ से उत्पन्न होगा तभी राजपद को प्राप्त कर सकेगा.

पाँच वर्ष के बालक ध्रुव को अपनी सौतेली माता के इस व्यवहार पर बहुत क्रोध आया पर वह कर ही क्या सकता था? इसलिए वह अपनी माँ सुनीति के पास जाकर रोने लगा. सारी बातें जानने के पश्चात् सुनीति ने कहा, 'संपूर्ण लौकिक तथा अलौकिक सुखों को देनेवाले भगवान नारायण के अतिरिक्त तेरे दुःख को दूर करनेवाला और कोई नहीं है. तू केवल उनकी भक्ति कर.'

माता के इन वचनों को सुनकर बालक ध्रुव भगवान की भक्ति करने के लिए निकल पडा. मार्ग में उसकी भेंट देवर्षि नारद से हुई. नारद मुनि ने उसे वापस जाने के लिए समझाया किंतु वह

नहीं माना. तब ध्रुव के दृढ संकल्प को देख कर नारद मुनि ने उसे 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र की दीक्षा देकर उसे सिद्ध करने की विधि समझा दी. बालक ध्रुव ने यमुना नदी के तट पर मधुवन में जाकर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र के जाप के साथ भगवान नारायण की कठोर तपस्या की.अल्पकाल में ही उसकी तपस्या से भगवान नारायण ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन देकर कहा, 'हे राजकुमार! मैं तेरे अन्तःकरण की बात जानता हूँ. तेरी सभी इच्छाएँ पूर्ण होंगी.'

इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि दृढ संकल्प से ईश्वर शीघ्र प्रसन्न होकर हमारा कल्याण करते हैं.

वह गुरु कहलाता

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

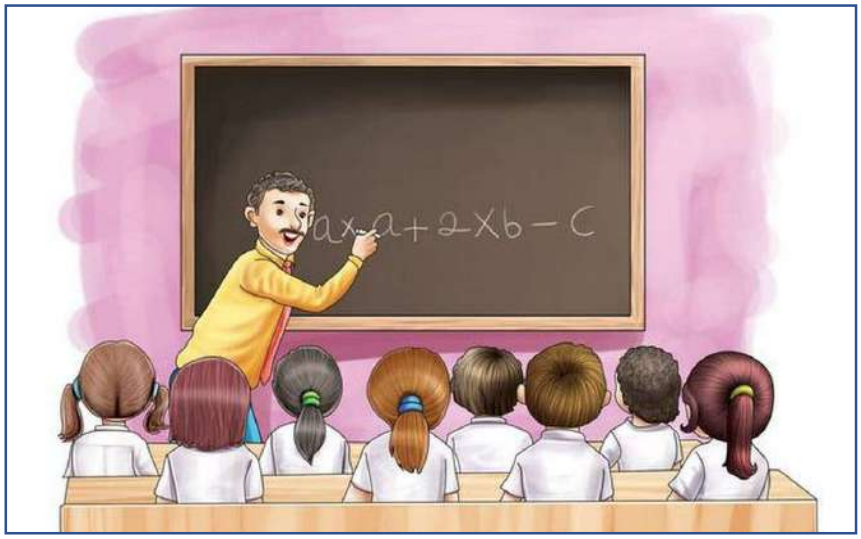

शिक्षा का ज्ञान जो देता,
जीवन को प्रकाश से भरता.
अक्षरों से कराता दोस्ती,
किताबों से कराता मित्रता.
वह कोई और नहीं,
वही हमारा गुरु कहलाता.

रंग-बिरंगे चित्रों से परिचय कराता,
ज्ञान- विज्ञान की बातें बताता.
राजनीति और आविष्कारों कीबातें,
किस्से-कहानी, कविता भी सुनाता.
वह हमारा गुरु कहलाता..

गणित की बारीकी बताता,
जीवन में जोड़ना, दुखों को घटाना.
खुशियों का गुणा, अपनों का भाग लगाना.
हमको जो ये सब सिखाता.
वह हमारा गुरु कहलाता..

राजा

रचनाकार- डॉ.अखिलेश शर्मा, इन्दौर

जंगल का राजा है शेर,
करे मिनट में सबको ढेर,
जब-जब वह गुर्राता है,
सारा जंगल थर्राता है.

पहेलियाँ

रचनाकार- तेजेश साहू

1.

वह कौन सी चीज़ हैं जो
एक जगह से दूसरे जगह जाती हैं
पर अपनी जगह से हिलती नहीं

2.

एक चीज़ का सस्ता रेट लम्बी
गर्दन मोटा पेट
पहले सबका पेट भराये
फिर सबकी प्यास बुझाये

3.

ऐसी कौन सी जगह हैं
जहाँ अगर 100 लोग जाते हैं
तो 101 लोग वापस आते हैं

4.

एक किले के
दो ही द्वार
जिसके सैनिक लकड़ीदार
दिवार से टकरा गये
तो खत्म उनका संसार

5.

वो क्या हैं जो मन में है
और दिल में है पर धड़कन में नहीं हैं

उत्तर: - 1. सड़क 2. सुराही 3. बारात 4. माचिस 5. आमिर खान

गणेश वंदना

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

छन्न पकैया, छन्न पकैया, बाल गणेश पधारे.
मूषक ऊपर सवार होकर, आए मेरे द्वारे..

छन्न पकैया, छन्न पकैया, बच्चों के मनभाए.
सबके घर में जा-जाकर, लड्डू मोदक खाए..

छन्न पकैया, छन्न पकैया, सब को विद्या देते.
छोटे नटखट बाल गणेशा, कभी नहीं कुछ लेते..

छन्न पकैया, छन्न पकैया, गौरी पुत्र गणेश.
माता जी हैं पार्वती और, पिता जी हैं महेश..

छन्न पकैया, छन्न पकैया, सबके संकट हरते.
जो भी माँगे सच्चे मन से, झोली उसकी भरते..

पढ़ाकू शेर

रचनाकार- डॉ. मंजरी शुक्ला, पानीपत

चिड़ियाघर घूमते-घामते अचानक बबलू का सामना शेर से हो जाता है. डर के मारे बबलू के हाथ पैर काँपने लगते है.

शेर हँसते हुए बोला- "डलो मत, मै सिर्फ़ तमातल और दाजल थाता हूँ."

"तुम... तुम तो तोतले हो!" बबलू ने आश्चर्य से कहा

"हाँ.. थई पहचाना" शेर ने जवाब दिया

"मै परना चाहता हूँ." शेर ने कहा

"पर मेरे पास तो किताब ही नहीं है." बबलू बोला

"मेले पाछ है, देथो..."शेर ने एक रंगीन चित्रवाली किताब दिखाते हुए कहा

"कितनी सुन्दर किताब! कहाँ से आई?"

"एक छोता बच्चा छोल दया था."

"अरे वाह, यह तो बहुत सुन्दर किताब है." बबलू बोला

"हाँ...अब जल्दी से परा दो." शेर ने उत्सुकता से कहा

बबलू बोला - "क से कबूतर"

शेर ने दोहराया-"क से कबूतड़"

बहुत बढ़िया- "ख से खरगोश"

शेर खुश होते हुए बोला- "थ से थरदोश"

शेर किताब पर झुकते हुए बोला- "और बटाओ.. जल्दी बटाओ सारा परा दो मुझे."

बबलू हँस पड़ा और उसने शेर को सभी चित्र दिखाते हुए पूरी किताब पढ़ा दी किताब बंद करते हुए बबलू बोला-"अब मैं चलता हूँ."

शेर यह सुनकर दुखी हो गया और बोला-"जल्दी आना, दुछली तीताब लेतल".

"हाँ.. तुम्हारे खाने के लिए गाजर और टमाटर भी लाऊंगा."

"औल.. औल.. किछि को बताना मत कि मैं तोतला हूँ" शेर ने धीरे से कहा

बबलू दौड़कर शेर के गले लग गया और उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए बोला-"कभी नही"

शेर आखें बंद करके मुस्कुरा उठा.

औरत

रचनाकार- रत्ना गुप्ता

सबको बाँधने वाली डोर है औरत,
छाई हुई हर ओर है औरत,
खुद में समेटे दुर्गा की शक्ति,
मत समझो कमजोर है औरत.

पूरी शक्ति लगा के भागे,
हर पल रहे सबसे आगे,
रात रात भर रहती जागे,
तब जाकर हक अपना माँगे.

जमीं से लेकर आसमाँ तक,
जीत चुकी हर दौड़ है औरत.
जननी बनकर देती जनम,
पत्नी बनकर निभाती कसम.

अपने हों दुखी तो आँखें नम,
कौन कहे दायित्व ये कम.
जिम्मेदारी की रस में ही,
रहती सदा सराबोर है औरत.

सबको बाँधने वाली डोर है औरत,
मत समझो कमजोर है औरत.

नदियाँ

रचनाकार- स्व. महेन्द्र देवांगन माटी

कलकल करती नदियाँ बहतीं, झर-झर बहते झरने.
मिल जात हैं सागर तट में, लिए लक्ष्य को अपने..

सबकी प्यास बुझाती नदियाँ, मीठा पानी देतीं.
सेवा करती प्रेम भाव से, कभी नहीं कुछ लेतीं..

खेतों को ये पानी देतीं, लोग फसलें खूब उगाते.
उगती है भरपूर फसल तब, हर्षित सब हो जाते..

स्वच्छ रखे सब नदियाँ जल को, जीवन हमको देती.
विश्व टिका है इनके दम पर, करते हैं सब खेती..

गंगा यमुना सरस्वती की, निर्मल है यह धारा.
भारत माँ के चरण पखारे, यह परचम हमारा..

विश्व गगन में अपना झंडा, हरदम हैं लहराते.
माटी की सौंधी खुशबू को, सारे जग में फैलाते..

शत-शत वंदन इस माटी को, इस पर ही बलि जाऊँ.
पावन इसके रज कण को मैं, माथे तिलक लगाऊँ..

खूब पढाते टीचर जी

रचनाकार- प्रमोद दीक्षित मलय, बांदा (उ. प्र.)

अच्छी बात हमें सिखाते, टीचर जी.
खूब मेहनत से हमें पढ़ाते, टीचर जी..

मोती जैसे दाँत चमकते, आँखे तेज.
पान-मसाला नहीं चबाते, टीचर जी..

होमवर्क न करके लाते बच्चे जो हम.
तब डाँटते, चपत लगाते, टीचर जी..

कोई बात समझ न आती,हम कहते.
एक नहीं दस बार बताते, टीचर जी..

पढ़ाते-लिखते मन जब लगे ऊबने.
कविता, गीत, कथा सुनाते, टीचर जी..

शेर-बकरी, लंगडी-दौड़, नेता-खोज.
बहुत सुंदर खेल खिलाते टीचर जी..

राष्ट्र भाषा की व्यथा

रचनाकार- कृति तम्बोली, कक्षा पांचवी, प्राथमिक शाला गतौरा

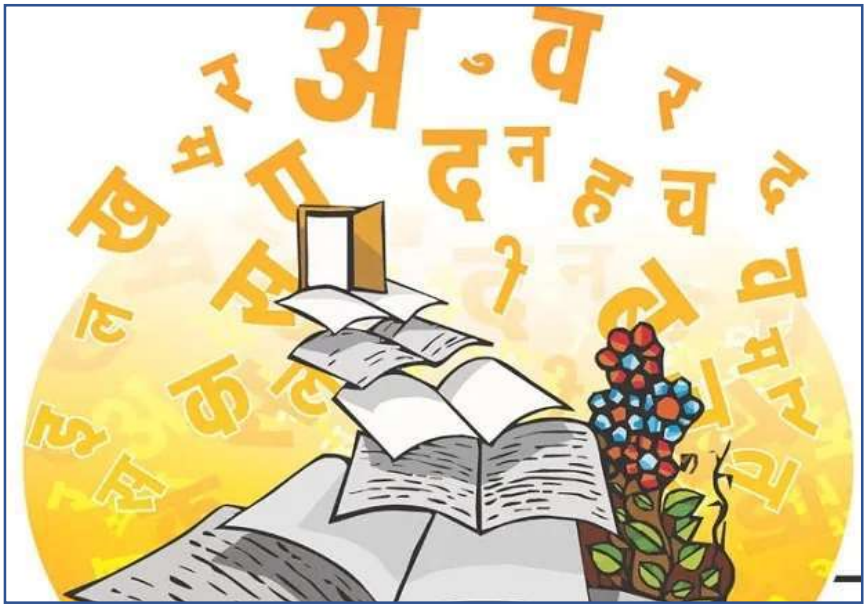

दुख भरी इसकी गाथा !
क्षेत्रीयता से ग्रस्त है,
जाति-पाँति से त्रस्त है !
हिंदी का होता है अपमान,
घटती है भारत की शान !
हिंदी दिवस पर्व है,
इस पर हमें गर्व है !!

नटखट नन्ही

1. टीचर: महात्मा गांधी का नाम दुनिया के कोने-कोने में प्रसिद्ध है.
   नन्ही: लेकिन दुनिया तो गोल है. फिर उसमें कोने कैसे हो सकते हैं?

2. जादूगर- बच्चों, मैं इस रूमाल को जादू से कबूतर बनाकर दिखाऊंगा.
   नन्ही- इसमें कौनसी बड़ी बात है.
   हमारे टीचर तो बिना किसी जादू के ही रोज मुर्गा बनाते हैं!

3. मम्मी: नन्ही, तुम पढ़ाई करते समय सामने आईना क्यों रखती हो?
   नन्ही: वो इसलिए कि मुझे अकेले पढ़ना अच्छा नहीं लगता!

4. नन्ही चिंटू से: जरा देख तो बाहर सूरज निकला या नहीं
   चिंटू: बाहर तो अंधेरा है
   नन्ही: तो टार्च जला कर देख लो

5. नन्ही एक किताब पढ़ रही थी, जिसका टाइटल था, 'बच्चों का सही पालन पोषण'
   माँ: नन्ही तुम यह किताब इतने ध्यान देकर क्यों पढ़ रही हो?
   नन्ही: मैं यह देखना चाहती हूँ कि मेरा पालन-पोषण ढंग से हो रहा है या नहीं.

सत्य की जीत

रचनाकार- श्वेता तिवारी

सोनपुरी नामक गांव में एक बुद्धिमान व्यक्ति रहता थ. उसका नाम होशियार सिंह था. गाँव वाले उसका बहुत सम्मान करते थे. एक बार होशियार सिंह घूमने के लिए दूर के एक गाँव में गया. उस गाँव का एक किसान होशियार सिंह की बातों से बहुत प्रसन्न हुआ. किसान ने खुश होकर अपनी सबसे सुंदर गाय होशियार सिंह को भेंट दे दी.

वह गाय खूब दूध देती थी. होशियार सिंह गाय को लेकर अपने गाँव की तरफ चल दिया. शाम हो गई थी. गाँव तक पहुंचने में रात हो जाए.गी बच्चे गाय को देखकर बहुत खुश होंगे. सबको सुबह शाम दूध पीने को मिलेगा, होशियार सिंह सोच रहा था.

गाय का नटखट बछड़ा उछलता कुदता साथ- साथ चल रहा था. एक ठग की नजर गाय पर पड़ी. वह होशियार सिंह के पास पहुंचा और बोला -"बहुत प्यारी गाय है बहुत दूध देती होगी.", "हाँ छह लिटर दूध देती है"होशियार सिंह बोला, तब तो यह गाय मेरे लिए बहुत अच्छी रहेगी कह कर ठग ने होशियार सिंह के हाथ से गाय का रस्सी को छीन लिया और बोला -"ब यह मेरी गाय है तुम्हारी नहीं"

यह देख कर होशियार सिंह चोर- चोर कह कर चिल्लाया. शोर सुनकर आसपास के सभी लोग इकट्ठे हो गए.

ठग बोला-"भाइयों यह मेरी गाय हैं इसने चोर-चोर की आवाज लगाकर आप सबको इकट्ठा कर लिया है. मुझे चोर कहने से यह गाय इसके नहीं हो जाएगी."

होशियार सिंह बोला-"यह झूठ बोल रहा है यह गाय मेरी है अगर यह मेरे हाथ से गाय का रस्सा न खींचता तो मैं क्यों चिल्लाता मैं यह गाय 100 रुपए में खरीद कर लाया हूँ."

ठग ने कहा-"मुझे यह गाय एक किसान ने भेंट में दी है"

होशियार सिंह बोला-"भाइयों अब आप खुद ही समझ लो यदि यह गाय इसकी होती तो यह दाम जरूर बताता भेंट में मिलने की बात यह इसलिए कह रहा है क्योंकि यह गाय इसकी नहीं है यह गाय मेरी ही है"

होशियार सिंह ने कहा-" तुम कैसे कह सकते हो कि गाय तुम्हारी है"

ठग हँसा तब तक होशियार सिंह ने अपनी दोनों हथेलियों से गाय की दोनों आँखें बंद कर दी और ठग से कहा-"यह गाय अगर तुम्हारी है तो बताओ इस की कौन सी आँख कनी है"

ठग घबरा गया उसने गाय की आँखें ठीक से देखी तो ही नहीं थी वह हिम्मत करके बोला-" इसकी दाईं आँख कानी है"

होशियार सिंह जोर से बोल-"आप सब सुन ले यही बता रहा है कि इसकी दाईं आँख कानी है लेकिन इसकी कोई भी आँख कानी नहीं है" और आँखों से अपनी दोनों हथेलियां हटा ली

ठग भागने को हुआ लेकिन लोगों ने उसको पकड़ लिया उसकी खूब पिटाई की

ठग ने कहा-"मैं कभी ऐसा काम नहीं करूँगा"

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम बुद्धि के दम पर विपत्ति से बच सकते हैं

पहेलियाँ

रचनाकार- व्यग्र पाण्डे

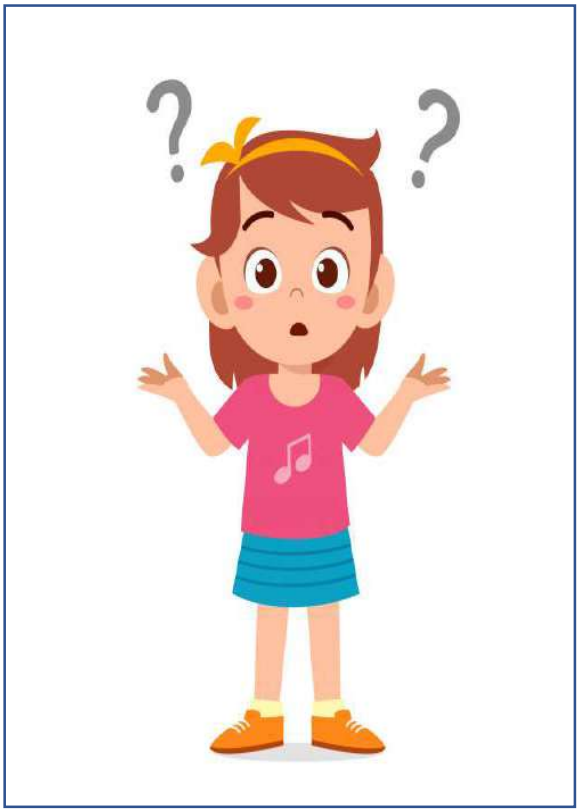

1.

सारी साल चलता रहता हूँ
नहीं बढ़ता पर इंच अगाड़ी
रहता मैं कमरों के अंदर
मुझ बिन ना चलती दुनिया की गाड़ी

2.

तीन पैर का होता है वो
रहता अपने घर के अंदर
स्वागत करता सबसे पहले
गर्मी का जो है सिकंदर.

3.

मारे फिर भी आदर पाता
पुलिस नहीं फिर क्या कहलाता

4.

चिड़िया सी आंगन में चहके
फुलवारी सा जिससे घर महके
अपनी होते हुए पराई
क्या कुछ कुछ समझ में आई

5.

बारह कदम चलकर रुक जाती
फिर कोई दूसरी आती
ये क्रम सदा बना रहता है
उसको मनुज क्या कहता है

6.

उगता-छिपता एक समान
जो रात-दिन की पहचान
दूर से जो सुहाता है
पास जाये तो जलाता है

7.

जिसे पकड़ना नहीं सुहाता
आराम जिससे फिर भी आता
चार पैर घर की पटरानी
हर अवस्था में लगे सुहानी

8.

रहे साथ जो जीवन भर
देते संज्ञा अंदर-बाहर
जो ड्योढ़ी का होता प्रहरी
बात सरल समझो ना गहरी

9.

सुबह सुबह सबके घर जाता
कदम कदम हरि के गुण गाता
पाता कुछ बहुत दे जाता
पहेली का है किससे नाता

10.

रूई जैसा लगता फिर भी रूई नहीं
भरा लबालब पानी फिर भी कुंई नहीं

उत्तर :--- 1. कैलेण्डर 2. पंखा 3. टीचर 4. बिटिया 5. साल (वर्ष) 6. सूरज 7. चारपाई 8. किबाड़ 9. भिखारी 10. बादल

सांझ सुहानी

रचनाकार- गोविन्द भारद्वाज

डूब रहा है सूरज फिर से, धरे रूप सिंदूरी.
समा रही है फिर धरती में, देखो धूप सुनहरी.

बदल गयी खेतों की काया, झूम रही हरियाली.
अम्बर ने है ओढ़ा भगवा, हवा चली मतवाली.

लौट चले पंछी घर अपने, लगा गगन में रेला.
पेड़ की सूनी शाखाओं पर, लगा सुरों का मेला.

बादल के आंचल से लिपटे, पर्वत ये मस्ताने.
सबके मन को लुभा रहे हैं, मीठे प्रेम तराने.

इंतजार क्यों?

रचनाकार- नीरज त्यागी

जाने वाला चला गया,
अब उसका इंतजार क्यों.
उड़ गए पिंजरे से जो परिंदे,
उनसे अब भी इतना प्यार क्यों..

रोशनी की चाहत की तूने,
लेकिन घनघोर अँधेरा छा गया.
अंधकार को जीवन क्यों ना बनाता,
बता तुझे उजाले से इतना प्यार क्यों..

सूखे फूलों को किताबो में सजाता,
मुरझाए उन फूलों से इतना प्यार क्यों.
नए फूलोंका एक बाग क्यों नहीं बनाता,
पुराने मुरझाए फूलों से इतना प्यार क्यों..

हर दिन अगर नए सपने बुनने हैं,
तो कुछ टूटे सपनों से इतना प्यार क्यों.
प्रगति पथपरअगरतुझे आगे बढ़ना है,
देगा कोई तुझे सहारा,इसका इंतजार क्यों..

इंतजार भी अब पूछ रहा है,
बता मुझसे तुझे इतना प्यार क्यों.
आने वाले कल में करूँगा काम ये अधूरा,
बता तुझे आने वाले पल का इंतजार क्यों..

समय मत खोना

रचनाकार- डॉ. त्रिलोकी सिंह, प्रयागराज

समय व्यर्थ मत खोना बच्चो,
सदा समय से सोना बच्चो,
सदा समय से जगना,
रोज सुबह तुम जग जाना.

थोड़ी देर टहलकर आना,
नित्य क्रियाओं से निवृत्त हो.
अपना होमवर्क निपटाना,

समय व्यर्थ मत खोना बच्चो,
मेहनत से तुम सब पढ़ना.
सदा समय से सोना बच्चो,
सदा समय से जगना.

जो मेहनत से पढ़ते-लिखते.
जीवन में वे आगे बढ़ते.
पर जीवन भर पछताते वे,
जो पढ़ने में आलस करते..

कभी निराश न होना बच्चो,
कभी न आलस करना.
सदा समय से सोना बच्चो,
सदा समय से जगना..

जो अनमोल समय को खोता.
वक्त पढ़ाई के जो सोता.
सदा भागता जो पढ़ने से,
जीवन में वह सफल न होता.

सुंदर स्वप्न संजोना बच्चो,
सदा सुपथ पर चलना.
सदा समय से सोना बच्चो,
सदा समय से जगना..

मेरे पापा

रचनाकार-टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

सारा जहान हैं मेरे पापा.
और आसमान हैं मेरे पापा.
कोई महापुरुष नहीं हैं पर,
सबसे महान हैं मेरे पापा.
दादा-दादी का दुलारा-सा,
हम सबके मान हैं मेरे पापा.
अपना घर तो एक मंदिरहै.
इस घर के भगवान हैं मेरे पापा.
प्रेम-खिलौना मिल जाता है,
खुली दुकान हैं मेरे पापा.

हमारे प्रेरणास्रोत- लाल बहादुर शास्त्री

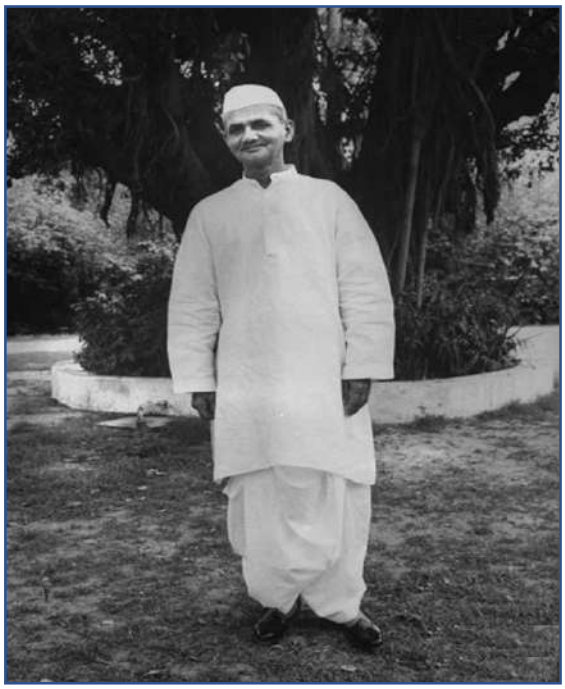

हेलो बच्चो,

आज हम बात करेंगे एक ऐसी शख़्सियत की जिनका जन्म उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव मुग़लसरय में हुआ. उनके पिताजी श्री शारदा प्रसाद जी एक शिक्षक थे. उनका जन्म ०२ अक्टूबर १९०४ में हुआ और सबकी सहमति से उनका नाम लाल बहादुर रखा गया. जब वह सिर्फ़ अठारह महीने के थे तभी उनके पिता जी का निधन हो गया. इसके बाद उनकी माँ रामदुलारी देवी उन्हें लेकर ननिहाल आ गईं. यहीं उनकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई.

एक दिन वे विद्यालय से घर लौटते हुए अपने दोस्तों के साथ आम के बगीचे में आम तोड़ने चले गए. वे आम तोड़ ही रहे थे कि तभी बगीचे का माली आ गया और उन्हें पकड़कर खूब मारने लगा. माली के पूछने पर उन्होंने बताया की उनके पिताजी शिक्षक थे तो माली ने उन्हें समझाया कि तब तो तुम्हें ऐसा काम बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए.

इस घटना ने उनकी ज़िंदगी बदल दी. इसके बाद तो वह तपती गर्मी में भी मीलों नंगे पैर स्कूल ज़ाया करते थे. उनका पढ़ाई के प्रति जुनून बढ़ता जा रहा था. उसके बाद वे उच्च शिक्षा के लिए अपने चाचा के यहाँ बनारस आ गए. वहाँ उन्होंने काशी विद्यापीठ से दर्शनशास्त्र में स्नातक की पढ़ाई की यहीं उन्हें शास्त्री की उपाधि मिली.

शास्त्री जी ने हिंदुस्तान की आज़ादी में अहम योगदान दिया. वे गांधी जी के विचारों से इतने प्रभावित थे कि मात्र १७ साल की उम्र में सन १९३० में उन्होंने महात्मा गांधी जी के साथ ब्रिटिश सरकार के ख़िलाफ़ असहयोग आंदोलन की शुरुआत की और नमक सत्याग्रह में भी भाग लिया. आज़ादी के समय जब कांग्रेस सरकार सत्ता में आयी तो उनकी कड़ी मेहनत करने की क्षमता और दक्षता को देखते हुए उन्हें उत्तर प्रदेश का संसदीय सचिव नियुक्त किया गया. इसके बाद वे रेल, परिवहन एवं संचार, वाणिज्य एवं उद्योग जैसे कई विभागों के मंत्री रहे.

१९६४ में जब उन्होंने देश के दूसरे प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली ही थी तभी पाकिस्तान ने हमारे देश पर हमला कर दिया और इधर भारत अकाल से पहले ही जूझ रहा था तब शास्त्री जी ने देशवासियों से अपील की, कि वे एक दिन का उपवास रखें. शास्त्री जी की छवि ऐसी थी की पूरे देश ने उनके इस फ़ैसले का मान रखा. इस मौक़े पर उन्होंने कृषि आत्मनिर्भरता पर ज़ोर देते हुए नारा दिया “जय जवान जय किसान”.

लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन हर उस नौजवान के लिए प्रेरणा का स्रोत है जो अभावों में जी रहा है. उन्होंने साबित किया कि कैसे अभावों में भी मेहनत और लगन से अपना मुक़ाम हासिल किया जा सकता है.

मुखौटे

रचनाकार- डॉ.अखिलेश शर्मा, इन्दौर

आया एक खिलौने वाला,
मुखौटे और गुब्बारे वाला,
पुंगी बाजा बुलाता सबको,
मुखौटे लगा डराता सबको.

जंगल की बात

रचनाकार- शुभम पांडेय गगन, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

हाँफता हुआ आया बल्लू चूहा,
सबको बात बताई है.
कोई बीमारी आई शहरों में,
जिससे मानव जाति घबराई है.

निकल न रहा कोई घर से,
दुकानों पर कोई न आता है.
सब चूहे हैं मौज मनाते,
कोई नहीं पकड़ा जाता है.

सब जानवर सुरक्षित हैं,
कोई न जंगल आता है.
नहीं कटते हैं पेड़ कोई,
न नदियों को रोका जाता है.

इंसानों का दुख बेजुबान समझें,
सब साथ दुआ में हाथ उठाते हैं.
सबके लिए अरदास करने को,
शेर राजा मीटिंग बिठाते हैं.

खावौ सुग्घर

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

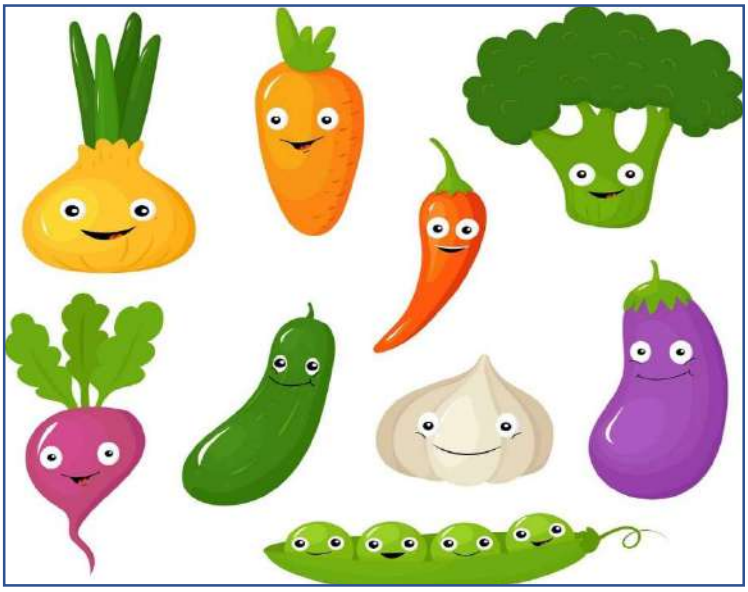

गोलू-मोलू
भाँटा भैया
आलू मुनगा
के संग डार.

भाजी पाला
कतको हावै
देखौ तुम जी
हाट बाजार.

कोहड़ा तुमा
अउ रमकलिया
ले लेहू तुम
छाँट निमार.

बरबट्टी हे
करिया गोरिया
डोंड़का फरे
रूख के डार.

गोभी बटुरा
गजब मिठाथे
फर धनिया ला
पीस के डार.

खावौ सुग्घर
मिलजुल के तुम
जिनगी बनही
सुग्घर तिहार.

हाथ धुलाई

रचनाकार- तुलस राम चंद्राकर

हाथ धुलाई के सात चरण,
सबको समझना और समझाना है.
इससे दूर हो जाएँगी बीमारियाँ,
यह बात सबको बताना है.
सबसे पहले भिगाओ,
फिर थोड़ा-सा साबुन, राख लगाओ.
उस पर थोड़ा पानी डालो,
हाथों को तुम स्वच्छ बना लो.
हाथ से हाथ क़ो रगड़ो.
ऊपर रगड़ो,नीचे रगड़ो.
अंगूठे और उँगली रगड़ो,
हथेली क़ो हथेली से रगड़ो.
सौ रोगों की एक दवाई,
साफ करो हाथों की कलाई.
हाथों की जब होगी धुलाई,

कीटाणु की होगी सफाई.
फिर से हाथ पर पानी डालो,
हाथों को तुम स्वच्छ बना लो.
भाई-बहन सब सुन लो.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी

एक बार की बात है, जंगल में एक हाथी रहता था. उसकी जंगल के राजा शेर प्रति गहरी आस्था थी. वह कभी बड़े- छोटे का भेद नहीं करता था,किसी भी विपदा के समय वह जानवरों की मदद करता था|इसलिए उसे सब अप्पू दादा कहकर पुकारते थे. जब भी कोई जंगल में पेड़ काटने आता चूहे तुरंत अप्पू दादा के कान में बात डाल देते और चूहों के साथ अप्पू दादा मोर्चा संभालने आ जाते और जंगल की सुरक्षा करते. जंगल की हरियाली बचाने -जानवरों को स्वच्छंद विचरण हेतु वातावरण निर्माण -सुरक्षा देने में अप्पू दादा का योगदान हमेशा रहता था. अप्पू दादा सबके चहेते थे. अप्पू को दो चूहे कालू और शालू खूब पसंद थे. एक बार जब शिकारियों ने अप्पू को जाल में फँसा लिया था तब इन्हीं दोनों चूहों ने जाल कुतर कर अप्पू को छुडाया था तभी से इनकी गहरी दोस्ती है. अप्पू दादा की वजह से ही उस जंगल में लोगों का आना जाना कम था जिससे विनाश नही हो रहा था. काश अप्पू जैसे सुरक्षा करने वाले हर जंगल में रहते तो आज परिस्थितियाँ कुछ और ही होतीं. अप्पू अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन निष्ठापूर्वक करता है और मस्त रहता है. जंगल में जानवरों के परिवार में अप्पू बरगद के पेड़ की तरह है. अप्पू सबको साथ लेकर चलने वाला बुद्धिमान जानवर है.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

हाथी मेरे साथी

एक जंगल में हाथी और बंदर रहता था. दोनों में गहरी मित्रता थी. दोनों एक साथ मजे से जंगल में घूमते और खेलते थे. उन दोनों भोजन की तलाश में घने जंगल में जाकर बड़े-बड़े वृक्ष पर बंदर चढ़ता था और फल को तोड़कर नीचे गिराता था. जिसे उसके दोस्त हाथी इकट्ठा करता था. फिर साथ दोनों खुशी से मिलकर खाते थे. इस तरह दोनों की जिंदगी हंसी खुशी से व्यतीत हो रही थी.

हाथी और बंदर की मित्रता को देखकर लोमड़ी को ईर्ष्या होने लगी. वह मन ही मन विचार कर रही थी, क्यों ना इसकी दोस्ती को अलग कराया जाय. अचानक तभी शिकारी अपने जाल में लोमड़ी को फंसा लेता है. लोमड़ी जाल में फंसे हुए मन ही मन जाल से निकलने और हाथी को फंसाने का उपाय सोच कर शिकारी को कहती है-शिकारी भैया मुझे जाल में फंसा कर क्या मिलेगा. मैं आपको ऐसा उपाय बताऊंगी, जिसका शिकार करके जिंदगी भर दूसरा शिकार करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी. लोमड़ी के बातों को सुनकर शिकारी सोच में पड़ जाता है. वह पूछता है-वह कौन सा उपाय है. लोमड़ी कहती है-"पास के ही जंगल में एक हाथी रहता है उसे आप जाल में फंसा कर बाजार में ले जाइए.सरकस वाला हाथी का मुंह मांगा इनाम देगा." लोभी शिकारी को लोमड़ी का उपाय पसंद आता है और लोमड़ी को छोड़ देता है.

लोमड़ी के बताए अनुसार शिकारी हाथी को फंसाने जाल फैलाकर दूर बैठ जाता है. इधर हाथी के पीठ पर बंदर सवार होकर मस्ती करते हुए जंगल में घूम रहे थे. तभी अचानक हाथी जाल में फंस जाता है उसको देख कर बंदर हाथी के पीठ से छलांग मार कर पेड़ पर चढ़ जाता है. हाथी बेचारा जाल में फंस जाता है. हाथी अपने दोस्त बंदर से कहता है- शिकारी के आने के पहले कुछ ऐसा उपाय करो कि मैं जाल से निकल जाऊं, नहीं तो यह शिकारी मुझे बाहर लेकर बेच देगा और हम दोनों मित्रअलग-अलग हो जाएंगे. बंदर कहता है-"नहीं 'हाथी मेरे दोस्त' जब तक मैं जिंदा हूं आपको मेरे से अलग कोई नहीं कर सकता.मैंअपने साथी बंदर एवं चूहा को बुलाकर जाल से छुड़ाने का उपाय करता हूं."तभी बंदर अपने साथी बंदर एवं चूहा के साथ हाथी के पास पहुंचकर जाल को चूहा की सहायता से काटकर हाथी को निकाल लेता है. हाथी एवं उसके साथी सभी घने वृक्ष में छुपकर शिकारी का इंतजार करते हैं. कुछ क्षण पश्चात शिकारी और लोमड़ी जाल में हाथी फंस गया होगा, ऐसा सोचकर देखने के लिए आता है. बंदर और हाथी समझ जाता है कि यह सब लोमड़ी का ही चलाकी है. हाथी एवं सभी जानवर एक साथ मिलकर शिकारी एवं लोमड़ी पर हमला कर देते है और दोनों मारा जातेहै. साथी जानवर हाथी के पीठ पर बैठकर हाथी मेरा साथी गाना गाते हुए मौज मस्ती करते हैं और सभी साथ मिलकर खुशी से जीवन व्यतीत करते हैं.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

प्यारी भाषा हिंदी

रचनाकार- अल्का राठौर

कितनी प्यारी भाषा हिंदी,
बेहद मीठी और सुरीली !
कभी इठलाती, कभी शरमाती,
कभी बिल्कुल मनचली बन जाती !!

प्यार का इक़रार इसमें,
सास-बहू की तकरार इसमें !
इस भाषा के शब्दकोश ने,
भर दी सब लोगों की झोली !!

अदब, आदर और सदाचार,
हर शब्द का उचित व्यवहार !
इस भाषा में है संगीत,
हिंदी में बने कितने मधुर गीत !

हर भारतीय की शान है हिंदी,
हम सबका आत्मसम्मान है हिंदी !
भारत माता के माथे की बिंदी,
कितनी प्यारी भाषा हिंदी !!

आशा का तू दीप जला

रचनाकार- प्रतिभा सिंह, सॉल्टलेक, कोलकाता

कदम न पीछे रखना राही,
आगे बढ़ता चल.
अगर निरंतर कर्म किया तो,
क्यों हारेगा कल..
ठहर नहीं पाएगी मुश्किल,
आशा का तू दीप जला.
जो आशावादी रहता हैं,
होता वही सफल..
कदम न पीछे रखना राही,
आगे बढ़ता चल.
लोहा पावक में ही तपकर,
कुंदन में जाता बदल..
हँसकर मुश्किल पार करे जो,
बन जाता वहीं मिसाल.
इसीलिए पथ की बाधा से,
होना नहीं विकल.
कदम न पीछे रखना राही,
आगे बढ़ता चल..
असफलता भी मिले अगर तो,

न करना उसका शोक तू.
कर सुधार अपनी कमियों को,
आगे बढ़ते रहना तू..
ऐसा किया अगर तो सचमुच,
स्वर्णिम होगा कल.
कदम न पीछे रखना राही,
आगे बढ़ता चल.

सौर ऊर्जा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

सौर ऊर्जा अति उपयोगी,
बिजली की वैकल्पिक सुविधा.
कभी न आता बिजली का बिल,
बिजली संकट, रहे न दुविधा..

मिलती है विकिरण ऊर्जा से,
करती हम सबका कल्याण.
पहले ताप ऊर्जा बनती,
फिर बिजली बन करती त्राण..

फोटो वोल्ट बैटरियों से,
तापीय बिजली हो उत्पाद.
रात में अथवा घिरे हों बादल,
संचित बिजली दे आह्लाद..

घर-बाहर तक बल्ब जलाओ,
बिजली व्यय की छोड़ो बात.
कूलर-पंखे खूब चलाओ,
टीवी का सुख लो दिन-रात..

दादा जी

रचनाकार-रीना मौर्य मुस्कान, महाराष्ट्र

बहुत अच्छे हैं मेरे दादा जी,
मुझसे बहुत प्यार करते हैं.
स्कुल छोड़ने आते हैं वो,
पढ़ाई में भी मदद करते हैं.
रोज शाम को घूमाने ले जाते,
चॉकलेट,कुल्फी मुझे खिलाते.
अच्छे -अच्छे खिलौनें दिलाते,
सुन्दर कहानियाँ भी सुनाते हैं.
बहुत अच्छे है मेरे दादा जी,
मुझसे बहुत प्यार करते हैं.

जल की कीमत

रचनाकार- श्वेता तिवारी

माँ जब बाजार से लौट कर आईं तो बाहर बहुत तेज गर्मी थी. वे पसीने से भीग गई थीं. थोड़ी देर सुस्ताने के बाद उन्होंने खरीदकर लाई एक-एक पानी की बोतल दोनों बच्चों को दी. नंदी खुशी से उछल पड़ी.

"इसमें इतना खुश होने की बात क्या है? "बाबू ने नंदी से पूछा.

नंदी बोली, "पानी की बोतल कीमती नहीं होती क्या?"

"हाँ, बोतल की कीमत तो होती है, पानी की नहीं. क्योंकि पानी तो हमें कहीं भी मिल जाता है."

माँ ने पूछा, "बताओ सबसे कीमती क्या है?"

बाबू बोला, "हीरा सबसे कीमती है."

नंदी ने कहा, "शायद सोना सबसे कीमती है."

तब माँ ने समझाया, "पानी सबसे कीमती है. जब हमें प्यास लगती है, तब हम पानी पीते हैं. दाल-चावल, सब्जी सभी कुछ पकाने के लिए हमें पानी की आवश्यकता होती है.

पेड़-पौधों में पानी डालते हैं तब रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं. अगर फसलों को पानी नहीं मिलेगा तो फसलें कैसे तैयार होंगी? हमें अनाज कहां से प्राप्त होगा? हाँ बेटा, पानी के बिना हम जीवित नहीं रह सकते. पेड़-पौधे सभी पानी के बिना मर जाएंगे. पीने के लिए तो साफ पानी ही चाहिए."

"पर माँ, हमारे स्कूल के पास एक कारखाना है. उससे रोज ढेर सारा गंदा पानी निकलता है."बाबू बोला.

"बेटे, गंदे पानी को साफ पानी में मिलने से रोकना चाहिए. अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो पीने के लिए साफ पानी नहीं मिलेगा.

"पानी गंदा होने से आसपास बदबू भी फैलने लगती है. इससे बहुत सारी बीमारियां पैदा होती हैं." कल मास्टर जी ने बताया था, नंदी ने कहा.

"अब हम समझ गए कि क्यों पानी सबसे कीमती होता है." नंदी और बाबू एक साथ बोल पड़े.

गाँधी बबा

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

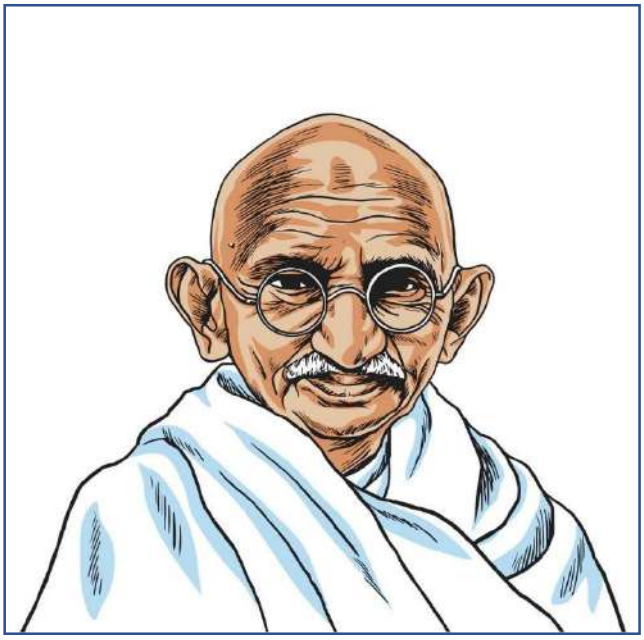

एक बेर तैं हर इहाँ आ जाबे गांधी बबा
ठलहा मन ला थोरिक समझा जाबे गांधी बबा.

चौबीस घंटा मंद मा माते रहिथे ये मन ह
उन मन ला रद्दा सही देखा जाबे गांधी बबा.

सरकारी चाँऊर खाके इतरावत हे ये मन ह
मिहनत के परिभाषा बता जाबे गांधी बबा.

कब तक ये मन हाथ म हाथ धर के बइठे रहही
जिनगी के मतलब तैं समझा जाबे गांधी बबा.

अपन मरे बिन कौनो ला सरग हर तो दिखय नहीं
इंकरो मन मा सपना नवा जगा जाबे गांधी बबा

राष्ट्रभाषा हिंदी दिवस

रचनाकार- तेजेश साहू

मेरा भारत महान है,
हिंदी इसकी शान है,
हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा हैं,
यही हमारी पहचान है.

भारत की आधी आबादी,
हिंदी के रंग में डूबी है,
भारत मे हैं विभिन्न धर्म,
यह भारत की खूबी है.

14 सितंबर को भारत में,
हिंदी दिवस मनाया जाता,
हिंदी से है हम सबका,
एक अनोखा मन का नाता.

आओ हम सब इस दिन,
हिंदी दिवस मनाते हैं,
पूरी दुनिया को मिल,
इसके गुण बताते है.

हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा हैं,
यह हमारी पहचान है,
हर्षोल्लास से सब बोलों,
मेरा भारत महान है.

गुरु शिष्य

रचनाकार-डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

पढ़- लिख ध्यान कर,
शिक्षकों का मान कर.
देश दुनिया के साथ,
अब खुद को जगाना हैं.

गुरु बात जान कर,
पानी पीना छानकर.
सदा ज्ञान पाना है तो,
ध्यान भी लगाना हैं.

ना किसी को बड़ा मान,
ना किसी को छोटा जान.
जग में समान सभी,
भाव ये जगाना हैं.

अशिक्षा से लड़कर,
नित आगे बढ़कर.
गुरु की सेवा में नित,
शीष भी झुकाना है.

कविता

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

बच्चों की मुस्कान कविता,
कथा-कहानी, ज्ञान कविता.

पूरब में सूरज की लाली,
पंछी का है गान कविता.

सहज रूप में ज्ञान सिखाती
भाषा का सम्मान कविता.

तुलसी, मीरा, सूर, कबीरा,
जायसी और रसखान कविता

हास्य, वीर, श्रृंगार और भी,
नवरस का है विधान कविता.

छंदबद्ध हो या विमुक्त हो
सुर लय का संधान कविता.

शिक्षक

रचनाकार-उषा साहू

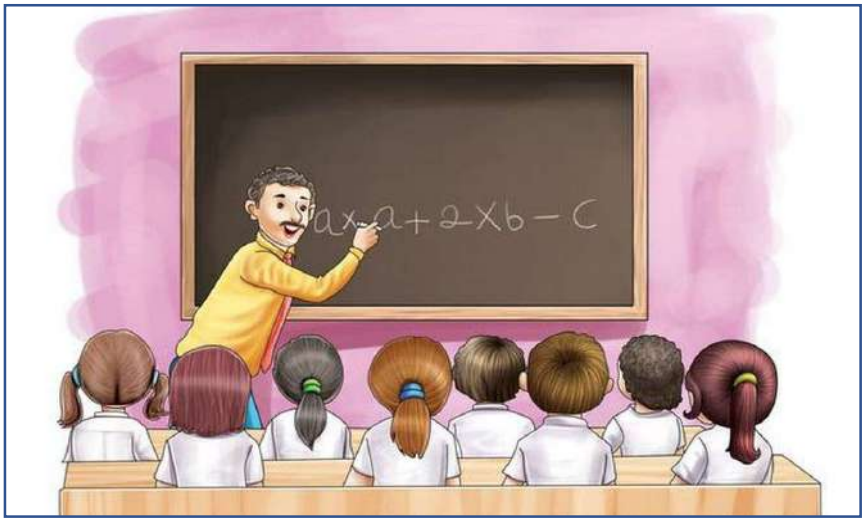

शिक्षक वही जो जीना सीखा दे,
जिंदगी जीने के लिये राह दिखा दे.
तराश दे हीरे की तरह बच्चों को,
दुनिया की राहों पर चलना सीखा दे.
शिक्षक वही जो सच्चा मार्ग
प्रशस्त की किरण दिखा दे.
बच्चों को अच्छा इंसान बना दे,
जिंदगी को फूलों सा महका दे.
शिक्षक वही जो हर मुश्किलों
में हिम्मत से लड़ना सीखा दे,
जिंदगी की हर कांटो भरी राह में.
हरदम आगे बढ़ना सीखा दे.
शिक्षक वही जो,
राष्ट्र निर्माण कराये.
समाज मे नव ज्योति जला के दे
समाज मे नव किरण बिखरा दे.
शिक्षा की अलख जगा दे.
शिक्षक प्रकाशपुंज का आधार है,
हमारे जीवन मे संस्कार है.

हमारे जीवन की बगिया को,
अपने आशीर्वाद से सवार दे.
शिक्षक आदर्शों का मिसाल
बनकर जीवन को निखार दें.
सदाबहार फूल सा खिलकर
हमारे जीवन मे बहार दे.
शिक्षक होता सबसे महान
शिक्षक देता सबको ज्ञान
शिक्षक में सूरज सा कमान
सभी शिक्षको को मेरा प्रणाम

पञ्चतन्त्र की कथा- चतुर बगुले की कथा

किसी समय एक विशाल वन में एक मनोरम सरोवर था. वह सदा स्वच्छ जल से भरा रहता था. सरोवर में कमल के सुंदर फूल खिले रहते थे. जल के अनेक जीव,मछली,मेंढक,सीपियां, केकड़े आदि भी उस सरोवर में रहते थे. वहीं एक बगुला भी रहता था, बड़ी लंबी गर्दन, लंबी-लंबी टांगें और जैसे दूध से धुले सफेद पंखों वाला.

बगुला बूढ़ा हो चला था. अब देर तक पानी के किनारे एक पैर उठाए मछलियों की प्रतीक्षा करना उसे कठिन लगने लगा था. इस भांति खड़े-खड़े वह थक जाता था. वह सोचता था कि कैसे बिना परिश्रम किए पेट भर भोजन मिल जाए. बगुला अनुभवी तो था ही, बहुत चतुर भी था. वह जानता था कि जब कोई कार्य शक्ति से संपन्न ना हो तो उसे युक्ति से किया जाना चाहिए.

उसने एक उपाय ढूंढ ही लिया. एक दिन भोर में ही वह सरोवर के किनारे खड़ा-खड़ा रोने का ढोंग करने लगा. कुछ मछलियों ने उसे रोते देखा और देखते-देखते यह बात सरोवर के सभी जीवों तक पहुंच गई. सभी उस किनारे पहुंच गए जहां बगुला खड़ा था. सभी को आश्चर्य हो रहा था.

एक मछली ने पूछा, "बगुले दादा, आप क्यों रो रहे हैं, ऐसा क्या हो गया, जो आप इतने दुखी हैं?"

बगुले ने अपने स्वर को दुख भरा बनाते हुए कहा, "प्यारे मित्रो, मैंने वन में रहने वाले अन्य प्राणियों की जो बातें सुनी हैं वे बहुत चिंता उत्पन्न करने वाली हैं. सभी यह कह रहे हैं कि इस बार ग्रीष्म ऋतु में सूर्य का ताप प्रचंड होगा. छोटे-मोटे पेड़-पौधे सूख जाएंगे, यह सरोवर भी सूख जाएगा. चारों ओर हाहाकार मच जाएगा."

बगुले की यह बात सुनकर सरोवर के सभी प्राणी सहम गए उन्हें लगने लगा कि ऐसे में तो अपने प्राणों की रक्षा करना दुष्कर हो जाएगा.

बगुले ने फिर कहा, "मेरे दुख का कारण दूसरा है. वन के सभी प्राणी यह वन छोड़कर कहीं और चले जाएंगे. मैं भी उड़कर किसी और स्थान को जा सकता हूँ किन्तु मैं आप सभी मित्रों के लिए चिंतित और दुखी हूँ. बरसों से इस सरोवर में हम साथ रह रहे हैं. आप सभी को इस असहाय अवस्था में छोड़कर जाने की कल्पना मात्र से मेरा हृदय फटा जा रहा है. ओह!! मैं क्या करूं?"

भयभीत हुए इन जल जीवों को कोई उपाय नहीं सूझा. उन्होंने बड़े कातर भाव से बगुले से कहा, "आप हम सबसे बड़े हैं, हम से अधिक सामर्थ्यवान भी हैं. आप ही कुछ उपाय बताइए जिससे इस संकट से हमारे प्राणों की रक्षा हो सके."

बगुले ने ठंडी सांस भरते हुए कहा, " उपाय तो है. यहां से थोड़ी दूर, पर्वत के उस पार मीठे जल का एक बहुत बड़ा सरोवर है जो कभी नहीं सूखता. मैं तुम सबको एक-एक कर वहां पहुंचा सकता हूं पर इसमें न जाने कितने माह लगें. अब मैं बूढ़ा भी हो चला हूँ एक दिवस में एक बार ही वहाँ जा सकता हूँ."

तब एक छोटी मछली ने कहा, "यदि आप यह कार्य आज से ही प्रारंभ करें तो समय रहते हम सब वहाँ पहुंच सकते हैं."

"हाँ, यही उचित होगा." सभी ने समर्थन किया.

बगुला मन ही मन प्रसन्न हुआ. उसे अपनी योजना सफल होती दिख रही थी. "ऐसा ही करेंगे." ऐसा कहते हुए, मुख पर उदासी का भाव दिखाते धीरे-धीरे वह वहाँ से चला गया.

इस पूरे संवाद को एक बूढ़ा कछुआ भी सुन रहा था. उसने सभी को संबोधित करते हुए कहा, "प्रिय बंधुओ, हमें बगुले की इन बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए. वह स्वभाव से ही हम सब का शत्रु है. भला वह क्यों हमारी सहायता करेगा. मेरी अवस्था 300 वर्षों से भी अधिक हो चुकी है. मेरा सारा जीवन इसी सरोवर में बीता है. इतने वर्षों में कभी ऐसा नहीं हुआ कि इस सरोवर का जल समाप्त हुआ हो. मेरा सुझाव है कि हमें बगुले की बातों में नहीं आना चाहिए और यहीं रहना चाहिए."

किंतु दुर्भाग्य! भयभीत हुए मन वाले किसी जीव को कछुए की बात उचित नहीं लगी.

उसे दिन से बगुला सरोवर से एक-एक प्राणी को अपनी पीठ पर बिठाकर वहाँ से ले जाता. सरोवर के ओझल होते ही एक निश्चित स्थान पर उतरता और निश्चिंत भाव से उस जीव को अपना भोजन बना लेता. सांझ होते ही सरोवर किनारे लौट आता और ऐसा अभिनय करता मानो बहुत थक गया हो.

अब उसके दिन बहुत आनंद से बीत रहे थे. एक दिन एक केकड़े के जाने की बारी आई. वह भी उसकी पीठ पर आरूढ़ हुआ. बगुला उसे लेकर उसी स्थान के निकट पहुंचा. केकड़े ने देखा, नीचे चट्टान पर मछलियों और दूसरे जीवों की अस्थियां बिखरी पड़ी हैं. पल भर में उसे पूरी बात समझ में आ गई.

क्रोध में भरकर उसने बगुले से कहा, "अरे दुष्ट! विश्वासघाती! तूने हम सब के साथ छल किया है."

बगुले ने व्यंग्य पूर्वक हंसते हुए कहा, "जहाँ तुम जैसे अविवेकी और बिना विचार किए औरों की बातें मानने वाले लोग हों वहाँ मुझ जैसा चतुर प्राणी भूखा नहीं मर सकता."

चट्टान पर उतर कर उसने केकड़े से कहा, "अब तुम भी मृत्यु के लिए तैयार हो जाओ."

पर केकड़ा भयभीत नहीं हुआ. वह जानता था कि संकट के समय साहस नहीं खोना चाहिए. उसने बगुले से कहा, "तुम्हें तुम्हारी दुष्टता का दंड मिलना ही चाहिए. यह कह कर उसने अपने मजबूत जबड़ों से बगुले का गला काट दिया. बगुले के प्राण पखेरू उड़ गये.

(प्यारे बच्चो, तुम्हारे घर के बड़े- बूढ़ों को ऐसी अनेक कहानियां आती होंगी. उनसे सुनाने का आग्रह करो. जो कहानी तुम्हें सबसे अच्छी लगे उसे हमें भेजो. उसे हम आपके नाम के साथ छापेंगे.)

कहाँ गया बचपन

रचनाकार- श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

गंगा जी के पावन जल सा, कहाँ गया बचपन,
ईश्वर की छवि जिसमें झलके, कहाँ गया दर्पण.
अपने और पराये का था, जिसमें भेद नहीं,
कोरे कागज जैसा निर्मल, कहाँ गया वह मन.

तितली बन फूलों सँग खेले, वह नटखट बचपन,
एक मिनट में करे दोस्ती, दूजे पल अनबन.
निश्छल और नि:स्वार्थ निष्कपट, द्वेष रहित रहना,
काश! मुझे फिर से मिल जाये, वह बीता जीवन.

मेरे पापा

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

सारा जहान है मेरे पापा.
समूचा आसमां है मेरे पापा.
कोई महापुरुष नहीं पर,
सबसे महान है मेरे पापा.
दादा-दादी का दुलारा सा,
मम्मी की शान है मेरे पापा.
मेरा घर एक मंदिर हैं.
जहाँ भगवान है मेरे पापा.
प्रेम-खिलौना मिलता हैं,
खुली दुकान है मेरे पापा.

पहेलियाँ

रचनाकार - उपांशु साहू

1.

हरा मकान सफेद समान
वहाँ से निकले
काला मसान, बताओ क्या

2.

लंबाई है मेरी शान
मीठे रस की मै हूँ खान
दांतों की कसरत करवाता
मेरा नाम क्या तुम्हें है आता

3.

एक पक्षी पर निर्जिव हूँ मैं
आसमान की करता सैर
एक बार जो उड़ जाऊं तो
वापस कभी धरती पर न आऊं

4.

वह कौन है जिसका सिर नहीं है
भिर भी वह टोपी पहनता है

5.

हरा घेरा पिला मकान
उसमें रहते काले इंसान

उत्तर :- 1. सीताफल 2. गन्ना 3. गुब्बारा 4. बोतल 5. सरसों

हिंदी भारत की शान

रचनाकार- गिरजा शंकर अग्रवाल

हिंदी भारत की शान है.
हम सबकी पहचान है..

हिन्द देश की है यह भाषा.
संस्कृति वैभव से परिपूर्ण
देवों की भाषा..
इनसे ही हमें पहचान मिला.
वेदों, पुराणों का ज्ञान मिला..

कराती हमें यह संस्कृति से परिचय.
उच्च विचार भरे जीवन से परिचय..
इसमें सफल जीवन की आशा.
ज्ञान, विज्ञान से परिपूर्ण यह भाषा..

यह मेरा अभिमान है.

हर भारतीयों का सम्मान है..
इसे पुनः गौरव दिलाने.
हिंदी दिवस पर सभी प्रण करे.
हिंदी के लिए अपना जीवन.
आज सभी अर्पण करें..

सफलता की कहानी- जहाँ चाह वहाँ राह

मेरा नाम श्रीमती अंजू मेश्राम है, मैं कन्या आश्रम शाला मुण्डागाँव, बस्तर में शिक्षिका के रूप में कार्यरत हूँ. पिछले वर्ष ''परियोजना विजयी'' के अंतर्गत हमें जीवन कौशल को जानने व समझने का मौका मिला.प्रशिक्षण के दौरान मैंने महसूस किया है कि "जीवन कौशल न केवल बालिकाओं के लिए, बल्कि हमारे लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण और लाभदायक है". मैंने स्वयं जीवन कौशल के माध्यम से, एक छात्रा में आए सकारात्मक परिवर्तन को प्रत्यक्ष देखा है. मैं आप सभी को उससे अवगत कराना चाहती हूँ.

ये कहानी कक्षा-7वीं में अध्ययनरत छात्रा बुदरी की है. बुदरी अत्यंत गरीब परिवार से है, बुदरी के माता-पिता शिक्षित नहीं हैं. बुदरी की प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शाला गुडापारा(पुरुसपाल, बस्तर) में हुई है, उसने पिछले वर्ष कक्षा-6 में हमारे आश्रम में प्रवेश लिया. कक्षा-6 में बुदरी पढाई में अत्यंत कमजोर थी, उसे हिंदी व अंग्रेजी पढ़ना नहीं आता था, मैंने कक्षा 6 में उसे पढ़ना सिखाने का बहुत प्रयास किया लेकिन मैं असफल रही, पढ़ाई में कमजोर होने के कारण बुदरी में आत्मविश्वास की अत्यंत कमी थी, न सहपाठियों से वह बात कर पाती थी न आश्रम की अन्य बालिकाओं से.

मैं कक्षा 6 व 7 के सत्रों का संचालन करती हूँ. एक दिन कक्षा-7 में जीवन कौशल सत्र के संचालन के दौरान मैंने ''भविष्य के लिये लक्ष्य तय करना'' विषय पर चर्चा की, जिसमें मैंने बालिकाओं को अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक लक्ष्यों के विषय में बताया, एक गतिविधि के

अंतर्गत बालिकाओं को उनके अल्पकालिक तथा दीर्घकालिक लक्ष्य तय करना तथा उन्हें पूरा करने हेतु 3 उपायों पर विचार करना था.बुदरी से पूछने पर, उसने बताया कि उसने अल्पकालिक लक्ष्य- रोज गृह कार्य पूर्ण करना तथा दीर्घकालिक लक्ष्य-नर्स बनना तय किया है. लेकिन वह अपने अल्पकालिक लक्ष्य को लेकर चिंतित थी कि उसे पढ़ना नहीं आता तो वह अपना गृहकार्य कैसे पूर्ण करेगी? मैंने उसे सुझाव दिया कि वह पढ़ना सीखने को अपना अल्पकालिक लक्ष्य चुने और एक महीने में पढ़ना सीखे. इसे प्राप्त करने के लिए मैंने उसी की कक्षा की 2 बालिकाओं मोनिका और गजमनी को सहायक के रूप में नियुक्त किया. मोनिका और गजमनी ने बुदरी को पढ़ना सिखाना, अपना अल्पकालिक लक्ष्य निश्चित किया. एक महीने बाद हिन्दी की कक्षा के दौरान मैंने बालिकाओं से एक-एक कर पुस्तक पढ़ने के लिए कहा. मैंने देखा कि बुदरी भी अपनी बारी आने पर फर्राटे से पुस्तक पढ़ रही है. यह देखकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई. मैंने कक्षा में बुदरी तथा उसकी सहयोगियों- मोनिका और गजमनी की प्रशंसा की.कक्षा की सभी बालिकाओं ने उनके लिए तालियाँ बजाईं. इस दिन के बाद से मैंने बुदरी में बहुत अच्छा परिवर्तन देखा है. अब वह गृहकार्य पूर्ण करके लाती है, कक्षा कार्य में नेतृत्व करने का प्रयास करती है और सबसे अच्छी बात कि अब उसने बहुत सारी बालिकाओं से दोस्ती कर ली है.बुदरी को इसके बाद मैंने अंग्रेजी पढ़ना सीखने का लक्ष्य निर्धारित करने के लिए कहा है.

बुदरी से प्रेरित होकर आश्रम की अन्य बालिकाएँ भी पढ़ना सीख रही हैं, जिन्हें अंग्रेजी पढ़ना नहीं आता. उन्होंने अंग्रेजी पढ़ना सीखने को अपना लक्ष्य बनाया है और जिन्हें पढ़ना आता है उन बालिकाओं ने हिन्दी व अंग्रेजी बोलना सीखने को अपना लक्ष्य निर्धारित किया हैं. अधीक्षिका श्रीमती पुष्पा मेश्राम से ज्ञात हुआ कि बुदरी गणित में भी मेहनत कर रही है, आखिरी कक्षा में उसने सवाल हल करके उन्हें दिखाया था. हम सभी बुदरी में आए इस परिवर्तन से बहुत खुश हैं, यह परिवर्तन न केवल बालिकाओं को बल्कि हमें भी प्रेरित करने वाला है.

इस घटना से मुझे महसूस हुआ कि....''जीवन में लक्ष्य तय करना अत्यंत आवश्यक है''. अब मेरा अल्पकालिक व दीर्घकालिक लक्ष्य है कि, मैं जीवन कौशल के सभी सत्रों को इसी प्रकार पूर्ण तैयारी के साथ संचालित करूँगी और सभी बालिकाओं तक जीवन कौशल का लाभ पहुँचाऊँगी.

इस बारे में स्वयं बुदरी का कथन है कि- "मैडम के सुझाव पर जब मैंने पढ़ना सीखने को लक्ष्य बनाया, तो मैंने मेरी सहयोगियों मोनिका और गजमनी के साथ मिलकर योजना बनाई. हमने तय किया कि स्कूल की छुट्टी के बाद शाम को एक घंटा वे मुझे पढ़ना सीखने में मदद करेंगी. मुझे अक्षर ज्ञान था लेकिन मात्राओं को जोड़कर पढ़ना नहीं आता था. अभ्यास के दौरान गलती होने पर मेरी सहेलियाँ मेरी मदद करती थीं इस तरह से मैंने पढ़ना सीखा."

आना संगी बइठले

रचनाकार- इश्वरी राम

आना संगी बइठले गोठियालेना वो
मया पिरित के बोलीला गुठियालेना वो
तोर मन मे का बात हे बतादेना वो
जम्मो दुख पीराला इहे बिसरदेना वो
तन अव मन के नाताला जुहादेना वो
मोगरा फूल कस मोरो मयाला महकादेना वो
आहे गोदना वली मोर नाम के गोदना गोडालेना वो
जम्मो दुख पिराला संगी भुलादेना वो
तोर मन के अंतस्मा मोला बिठालेना वो.
मया पिरित के दुखला इहे बिसरलेना वो.
मोर आखि में झूलत रथच तेहा आठो पहर
एकरे सती तोला कथव ते मोर सन मया कर.
मोर मया के रस्सी मा तेहा बधाजना वो
मोर मया के बातल संगी हसि उदझन वो
तोर बिना मे जी नई सकव कइसे तोला बताव
ये पिरित के बधनाला कइसे मेहा छोडाववं
मया के वो बातला संगी कइसे मेहा भुलाववं.
मोर जीवरा में चिपके मीठ बोलीला कइसे मे भुलाववं.
तोर बिना में जी नई सकव कइसे मेहा तोला बतावव

आत्मनिर्भर बनेगा भारत

रचनाकार- कृष्ण कुमार ध्रुव "सृजन"

आत्मनिर्भर बनेगा भारत दे हमेशा अपना साथ.
विदेशी वस्तुओं को दूर करने बढ़ा अपना हाथ.

छोटे बड़े विभिन्न किस्म के उत्पाद यहां आया,
ऊँचे से लेकर नीचे सभी किस्म मन को भाया.

बाल खिलौने से लेकर साज सज्जा उत्पाद लाया.
विदेशों ने इंडिया से ही आर्थिक मजबूती पाया.

लूटने जहर बनाया नुकसान हुआ काया.
समझा न कालाबाजारियों के माया.

देशवासियों सब ठान लो एक बात.
इनके इरादों को देना होगा मात.

शपथ ले आज से स्वदेशी समान ही लेना.
मेहनत की कमाई को विदेश जाने नहीं देना.

उत्तम गुण स्वदेशी वस्तु में ही है पाना.
प्रकृति ने दिया जीवन अनमोल इसे नहीं खोना.

विश्व बंधुत्व भाई चारे की भावना रख चलता मेरा देश.
सबको अपना बनाना दोहरी नहीं है भेष.

एकता और अखंडता जाने सारा जहान,
विदेशी त्याग स्वदेशी अपनाएं तभी बनेगा देश महान.

बढ़ता झरना

रचनाकार- सतीश चन्द्र भगत, दरभंगा, बिहार

उतर उतर कर पर्वत पर्वत
कल-कल, छल- छल गाता झरना
आगे- आगे बढ़ता झरना.

कदम कदम पर ठोकर खाता
फिर अपना वह राह बनाता
आगे- आगे बढ़ता झरना.

नई उमंगें लेकर चलता
चट्टानों से भी वह लड़ता
हिम्मत लेकर बढ़ता झरना.

बाधाओं से ना घबराता
प्रगति पथ पर कदम बढ़ता
आगे-आगे बढ़ता झरना.

समय बहुत बलवान

रचनाकार- स्व. महेन्द्र देवांगन "माटी"

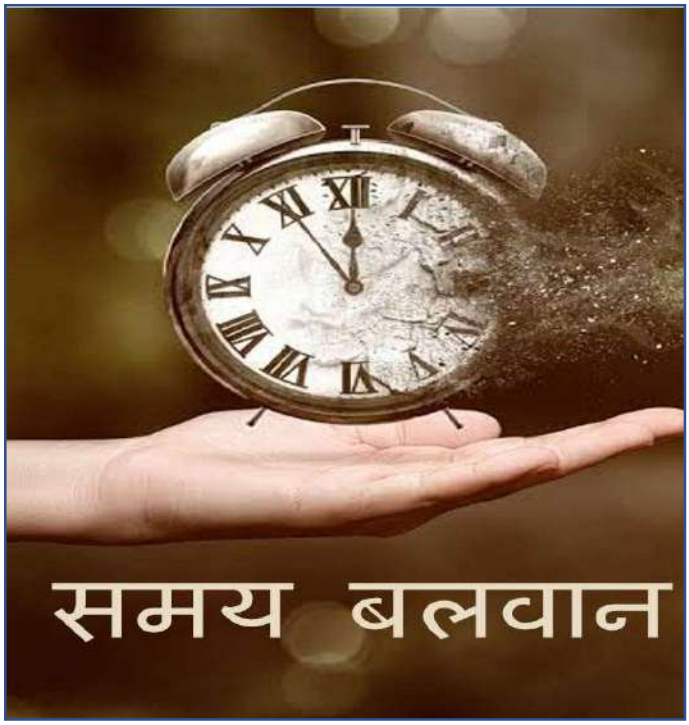

समय बहुत बलवान है, कीमत इसकी जान.
जान गया जो काल को, सच्चा मानुष मान..
मान सभी के बात को, मत बन तू नादान.
नादानी से होत है, जीवन भर अपमान..
मान बढ़े परिवार का, ऐसे कर लो काम.
काम करे जो आदमी, होय उसी का नाम..
नाम कमाओ प्रेम से, करके सेवा रोज़.
रोज़ करो कुछ दान जी, भूखे को दो भोज..
भोज कराओ खोज कर, बढ़ जायेगा मान.
मान समय का होत है, इसको भी तू जान..

मक्का की डाली

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार

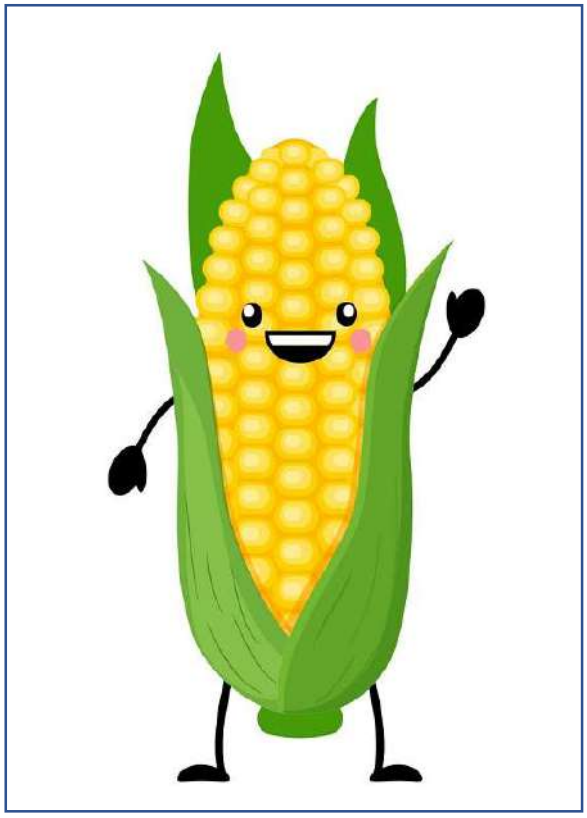

कितना प्यारा गाँव हमारा.
लगे स्वर्ग से सुंदर न्यारा.

दूर दूर तक हरे भरे वन
हरियाली से झूमे तन-मन

स्वयं प्रकृति ने रूप निखारा.

वातावरण स्वच्छ निर्मल है
शुद्ध वायु सुखप्रद शीतल है

निकट दिव्य सरिता की धारा.

खेतों में फसलें लहरातीं
चिड़ियाँ मधुरिम गान सुनाती

फूलों से महके चौबारा.

बाल-वृद्ध जन करें परिश्रम
शिक्षा ने तोड़े अनिष्ट भ्रम

नव कौशल ने भाग्य सँवारा.
कितना सुंदर गाँव हमारा.

मित्र को पत्र

लेखक- सुधीर श्रीवास्तव

प्रिय नीलेश,

तुम्हारी चिठ्ठी मिली. कल से लेकर अभी तक उसे कई बार पढ़ चुका हूँ.

तुम्हारी बातों से बड़ी खीज और निराशा झलक रही है. विशेष रूप से वहाँ, जहाँ तुम लिखते हो "... या तो ये बच्चे गणित नहीं सीख सकते या मुझे ही पढ़ाना नहीं आता...."

मुझे चिन्ता भी हुई और खुशी भी. चिन्ता इस बात पर कि तुम्हारे जैसा परिश्रमी व्यक्ति भी ऐसा कह सकता है. खुशी इस चीज पर कि तुम बच्चों के नहीं सीखने से परेशान होते हो. काश! सभी शिक्षक तुम्हारी तरह, बच्चों की फिक्र करने वाले होते.

तुम्हारी यही बात मुझे बाध्य कर रही है कि तुमसे इस पर बातें करूँ. पहले तुमसे बच्चों की कठिनाइयों पर बात करूँगा, फिर शिक्षक के रूप में तुम्हारी मुश्किलों पर. मैं नहीं जानता कि मैं जैसा सोचता हूँ या करता हूँ, उससे तुम्हें मदद मिलेगी या नहीं. क्योंकि हर बच्चे की अपनी समस्या होती है और कोई एक तरह का हल दूसरी जगह भी कारगर हो ऐसा जरूरी नहीं. फिर भी मुझे लगता है कि कुछ बातें ऐसी जरूर हैं जो सीखने की बेहतर परिस्थितियाँ बनाती हैं.

एक बच्ची गणित सीखते समय कैसी दिक्कतें महसूस करती है और कैसे उसे हल करती है, इस पर सोचते हुए मुझे कुछ बातें याद आ रही हैं. उसे वैसा ही लिखने की कोशिश करता हूँ ताकि तुम अपने ढंग से उसका विश्लेषण कर सको.

एक शाम जब मैं ऑफिस से घर लौटा तो देखा, मेरी छोटी बेटी सत्या अपनी माँ से उलझ रही थी. गुस्से से लगभग चीख रही थी- 'मैं नहीं पढ़ना चाहती गणित.... सबसे गन्दा विषय. कौन लाया इसको दुनिया में? अगर मुझे मिल गया तो उसे बहुत मारुँगी. बोलूँगी, चल मेरी क्लास में बैठ के देख...."

उसकी माँ ने मेरी ओर देखा. उनकी आँखों में एक सवाल था, ''क्या करुँ?" मैंने इशारे से ही कहा ''छोड़ दो.''

थोड़ी देर बाद मैं सत्या के पास जाकर बैठा. उसकी पीठ पर हाथ रखकर पूछा - ''क्या बात है बेटा?"

उसने मेरी ओर देखकर कहा- ''पापा, गणित अच्छा विषय नहीं है न?"

मुझे जवाब नहीं सूझा. थोड़ा ठहरकर मैंने कहा - ''हाँ बेटा, कभी-कभी मुझे भी ऐसा ही लगता है.''

वह आश्वस्त हुई. उसके विचार को स्वीकृति मिल गई थी.

मैंने पूछा- "आज मम्मी से क्यों झगड़ रही थीं?"

"मम्मी होमवर्क पूरा करने को कह रही थीं.''

"होमवर्क मुश्किल था, क्या?"

"मुश्किल नहीं था. मुझसे बन जाता है. पर आज स्कूल में डाँट पड़ी इसलिए गुस्सा आ रहा था."

"अच्छा तो ये बात है. क्या हुआ था स्कूल में?"

"पापा, आज दो तरह के सवाल मिले थे. एक, मीटर को सेंटीमीटर में बदलो दूसरा, सेंटीमीटर को मीटर में बदलो. टीचर बोलीं कि मीटर को सेंटीमीटर में बदलने के लिए सौ का गुणा कर दो.''

''तुम तो गुणा और भाग करना जानती हो, इसमें क्या प्रॉब्लम है?''

''प्रॉब्लम है पापा. मैं कई बार भूल जाती हूँ, कहाँ गुणा करना है और कहाँ भाग देना? आखिरी सवाल में तो किलोमीटर भी आ गया है.''

''ओह!... तुमने अपनी प्रॉब्लम टीचर को बताई?''

''हाँ पापा, मैं उनसे पूछा कि मीटर को सेंटीमीटर में बदलते समय सौ का गुणा क्यों करते हैं?''

''वाह! तुम्हारा सवाल तो बढ़िया था. क्या जवाब दिया टीचर ने?''

"टीचर जोर से बोलीं - जितना मैं कह रही हूँ उतना करो.''

ओह! मुझे कुछ सूझा नहीं क्या बोलूँ. फिर मुझे लगा, इस समय टीचर की इस प्रतिक्रिया पर सोचने से अच्छा है बच्ची के सवाल पर विचार किया जाए.

जब मैंने इस सवाल पर गौर किया तो मुझे लगा कि ऐसे और भी कई सवाल होंगे जिन पर सोचना होगा, जैसे बच्ची की वास्तविक समस्या क्या है? क्या वह मीटर, सेंटीमीटर के आपसी सम्बन्ध को समझती है? क्या उसे पता है कि इन इकाइयों की मदद से किन-किन चीजों की माप की जा सकती है? क्या वह मीटर और सेंटीमीटर के परिमाण में भेद कर सकती है?

क्योंकि मुझे तो अभी भी कठिनाई होती है जब मैं किसी बिल्डिंग की ऊँचाई या जमीन की लम्बाई-चौड़ाई या क्षेत्रफल का अनुमान लगाता हूँ या फिर मीटर या फुट में दिये गये परिमाण को आपस में बदलता हूँ. ये तो वे समस्याएँ हैं जिनकी मैं कल्पना कर पा रहा हूँ. न जाने ऐसी और कितनी बातें होंगी जो मेरी सोच से परे हैं.

यह सब सोचते हुए मैंने तय किया कि पहले यह पता किया जाए कि सत्या नाप-जोख के सम्बन्ध में मोटे तौर पर क्या-क्या जानती है. फिर उसे मीटर स्केल या टेप दिखाकर मीटर-सेंटीमीटर के बारे में बात की जाए. इतनी बातचीत से जो समझ बनेगी उसके आधार पर आगे सोचा जाएगा.

खाना खाते समय मैंने पूछा - सत्या मेरे लिए रोटी लाओगी ?

''हाँ पापा.''

''दो किलो ले आओ बेटा.'' मैंने सहज बनने का नाटक करते हुए कहा.

''दो किलो?'' उसने मेरी ओर आश्चर्य से देखा फिर कहा -

''पापा किलो में तो सब्जी, दाल, शक्कर लाते हैं.''

''अच्छा ऐसा है, तो चलो दो लीटर ले आओ आज इतना ही खा लूँ.''

''क्या मजाक है पापा, रोटी पेट्रोल है क्या जो लीटर में नापेंगे?''

''अच्छा तो जितनी तुम्हारी मर्जी उतना ही ले आओ.''

''बड़ी जल्दी हार मान गये पापा. मैं तो समझी थी कि अभी आप मीटर और घंटे में भी रोटी मंगवाएँगे.'' सत्या ने हंसते हुए कहा.

मुझे भी हँसी आ गई. मैंने कहा ''बेटा, मैं जानना चाहता था नापने की कौन-कौन सी इकाइयों को तुम जानती हो.''

"ये तो मैं समझ गयी थी आपके सवाल पूछने के ढंग से. पापा, मैं जानती हूँ कि मीटर और सेंटीमीटर से लम्बाई नापते हैं. मैं तो इतना जानना चाहती थी कि यहाँ गुणा-भाग करने के लिये सौ ही क्यों लेते हैं और ये कैसे तय करते हैं कि यहाँ गुणा करना है, वहाँ भाग देना है."

खाना खाकर जब उठा तो बात फिर शुरू हुई. मीटर टेप लेकर हम दोनों ने 'एक मीटर' लम्बाई पर गौर किया. फिर यह देखा कि कमरे की कौन-कौन सी चीजें एक मीटर से ज्यादा लम्बी या छोटी हैं. अपने अनुमान को जांचा भी, अनुमान के सही होने का मजा भी लिया. एक और गतिविधि की. दीवार और फर्श पर छोटे-छोटे निशान बनाए, फिर अनुमान से दूसरे निशान इस तरह बनाए कि वे पहले से एक मीटर दूरी पर हों. इसे जांचते समय बड़ा रोमांच हुआ. हम दोनों एक मीटर के बहुत नजदीक अनुमान लगा रहे थे ऐसा करते हुए हमें बहुत मज़ा आ रहा था.

फर्श पर एक मीटर लम्बाई का अनुमान लगाते समय हमें यह पता चला कि फर्श पर लगे हुये चार टाइलों की लम्बाई ठीक एक मीटर थी. एक टाइल की लम्बाई कैसे बताई जाए इस पर बातें करते हुये सेंटीमीटर की नाप को पहचाना. हमने यह देखा कि सत्या की तर्जनी का अगला हिस्सा यानी उसकी तर्जनी की पोर मीटर टेप पर बने किसी भी एक सेंटीमीटर के हिस्से को ठीक-ठीक ढँक लेता है.

अब यह पता चल गया था कि 'एक मीटर' कहने से चार टाइलों की लम्बाई के बराबर लम्बाई का अनुमान होता है, जबकि 'एक सेंटीमीटर' कहने से उँगली की एक पोर के फैलाव या उसकी चौड़ाई का पता चलता है. अब हमने फर्श पर लगी टाइल को उँगलियों से नापना शुरू किया. यह नाप एक जैसी नहीं आ रही थी. हमने तय किया कि इसे टेप से नापा जाए. नापने पर पता चला कि टाइल का एक किनारा पच्चीस सेंटीमीटर का है. दूसरी, तीसरी और चौथी सभी टाइल के किनारे एक बराबर निकले.

मैंने सत्या से पूछा "दो टाइलों की लम्बाई कितनी होगी?"

उसने कहा- "पच्चीस और पच्चीस याने पचास सेंटीमीटर..."

फिर उसने कहा- ‘‘पापा, मुझे बताने दीजिये... चार टाइलों की लम्बाई माने चार बार पच्चीस... याने सौ सेंटीमीटर और चार टाइलों की लम्बाई एक मीटर भी है.’’

अचानक वह चुप हो गई. कुछ सोचने लगी. फिर कुछ बुदबुदाने लगी.... शायद वही जो उसने अभी-अभी कहा था.

फिर उसने मेरी तरफ आश्चर्य से देखा उसकी आँखें खुशी से फैल गई थीं और चेहरा उत्तेजना से तमतमा रहा था. शायद उसने कुछ ऐसा पा लिया था जो उसके लिए बिल्कुल नया था और जिसकी उसे तलाश भी थी.

मेरी दशा भी भीतर ही भीतर कुछ ऐसी ही हो रही थी. मेरी खुशी की वजह दूसरी थी, मैं उसे ऐसी परिस्थिति में ला सका जहाँ वो खुद से किसी परिणाम को ढूँढ़ सके. ये क्षण बड़े अद्भुत थे. एक शिक्षक के रूप में मुझे हमेशा ऐसे पलों की तलाश रही है.

उसने लगभग चीखते हुए कहा,"पापा, चार टाइलों की लम्बाई को हम दो तरह से बता सकते हैं"- ‘‘चार टाइलों की लम्बाई एक मीटर है या चार टाइलों की लम्बाई सौ सेंटीमीटर है.’’

"बिल्कुल सही. वाह!" मैंने ज़ोर से उसकी पीठ थपथपाई.

"ये....." अपने दोनों हाथ उठाकर वह खुशी से चिल्ला उठी.

“अब समझ गई पापा, जितने मीटर, उतने ही सौ सेंटीमीटर. पाँच मीटर याने पाँच बार सौ सेंटीमीटर याने पाँच सौ सेंटीमीटर. थैंक यू पापा.’’

‘‘मैंने उसके गालों को थपथपाकर पूछा "कैसा लगा?’’

‘‘मजा आ गया.’’

रात के साढ़े ग्यारह बज गये थे. मैंने पूछा-“अब बस करें?”

सत्या ने कहा- ‘‘एक बात और बता दीजिये. सेंटीमीटर वाले भाग के अंदर जो छोटे-छोटे निशान हैं वो क्यों हैं?’’

‘‘बेटा, अब कल बात करेंगे....’’

“नहीं, अभी बताइये... उसका भी कोई नाम है क्या?”

“बस दो बातें बताऊँगा. वे मिलीमीटर के निशान हैं और जो चीजें एक सेंटीमीटर से भी कम लम्बाई, चौड़ाई या मोटाई की हों उन्हें नापने में इसकी मदद लेते हैं. जैसे तुमसे कोई पूछे कि पेंसिल या झाड़ू की सींक कितनी मोटी है तो तुम इसे मिलीमीटर में बता सकती हो.”

मैंने देखा उसका ध्यान कहीं और था. मेरी पूरी बात शायद उसने नहीं सुनी. मैंने पूछा “क्या सोचने लगी?”

उसने कहा “पापा यदि चींटियों के गाँव में सड़क बनानी पड़ेगी तो वो सड़क कम से कम तीन मिलीमीटर चौड़ी रखनी पड़ेगी. एक मिलीमीटर जाने वाली चींटियों के लिये, एक मिलीमीटर आने वाली चींटियों के लिये और एक मिलीमीटर की खाली जगह जिससे वो टकराएँ नहीं....”

उसकी इस कल्पना पर मैं चुप हो गया. मैं वहाँ तक नहीं पहुंच सका था. उस रात मैं यही सोचता रहा कि कैसे दिमाग में नये विचार, नई युक्तियाँ आती हैं. जब हम किसी काम में डूब जाते हैं तब शायद ऐसे मौके बनते हैं. एक बात और जो मुझे आनंदित कर रही थी वह यह कि बच्चे भी नया सोचने में बड़ों से पीछे नहीं हैं.

दूसरे दिन शाम को जब हम सब साथ बैठे थे, तभी वहाँ सत्या आई. उसके एक हाथ में कैंची और दूसरे हाथ में इलास्टिक की दो डोरियां थीं, एक बड़ी, एक छोटी. उसे देखते ही उसकी माँ ने पूछा "अरे! तुम इसे क्यों काट डालीं?"

सत्या ने बड़ी शांति से कहा ”इस टुकड़े को दुकान वाली आंटी को वापस करना है. आप एक मीटर लाने को बोली थीं. आंटी ने चार सेंटीमीटर ज्यादा दे दिया है.”

और हम सब हँस पड़े थे.

नीलेश, बातें खत्म नहीं हो रही हैं, गोया, चिट्ठी न हुई किताब हो गई. कई बैठकें हो गईं, बातें पूरी नहीं हुईं. टुकड़े-टुकड़े में लिखी ये चिट्ठी टुकड़ों में ही सही लेकिन पढ़ जरूर लेना. इतनी बातों में कोई एक तुम्हारे काम आ जाये तो मुझे तसल्ली हो जायेगी. मुझे तुम्हारी कोशिशों पर यकीन है. यह भी यकीन है कि तुम्हारे बच्चे तुम्हें प्यार करते होंगे. इस यकीन को सच में बदलने के लिये थोड़ी सी बातें और....

अब तक जो लिखा, वह बच्चों से जुड़ा हुआ था. जब हम बच्चों की क्षमताओं और कमजोरियों को पहचानने लगते हैं और जब उन्हें अच्छी लगने और न लगने वाली अनुभूतियों को खुद भी महसूस करने लगते हैं तो मुझे लगता है एक अच्छा शिक्षक होने के दिशा में आगे बढ़ रहे

होते हैं. लेकिन इतना ही पर्याप्त नहीं होता इसके बाद जरूरत होती है, अपनी जानकारियों और अपने पढ़ाने के तौर-तरीकों को बेहतर बनाने की.

अपने ज्ञान को बढ़ाते रहने और जो कुछ हम जानते हैं उसे ताजा करते रहने की हमारी आदत बहुत बढ़िया स्तर की नहीं है. पिछले सप्ताह एक शिक्षक साथी से भेंट हुई. चार माह हुए वे प्राथमिक शाला से उच्च प्राथमिक शाला में प्रोमोट होकर आए हैं. यहाँ गणित पढ़ाने के नाम से वे बहुत परेशान दिखे. उनका कहना था ''मैं किससे सीखूँ?'' जब मैंने उनसे पूछा कि आपने गणित की पुस्तकों को पढ़ा है क्या? तो उनका जवाब ''नहीं'' था. मैंने उनसे फिर पूछा, प्राथमिक शाला में गणित पढ़ाने के लिये गणित की किताब पढ़ते थे? तो उन्होंने कहा, "उन्हें पढ़ने की जरूरत ही नहीं थी."

मुझे आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि इसके पहले भी बहुत से लोगों में ऐसी सोच देखने को मिली. मुझे लगा, किसी स्तर पर हम सोचते हैं कि हमें बहुत कुछ आता है. उसमें कुछ जोड़ने के लिये संदर्भ ढूँढने, कुछ पढ़ने या कुछ करने की आवश्यकता नहीं है. वहीं दूसरी तरफ थोड़ी सी परिस्थितियाँ बदल जाने पर हमारी हिम्मत पस्त हो जाती है और तुरंत हम यह सोच लेते हैं कि हमसे तो कुछ हो ही नहीं सकता. हम दोनों ओर चरम पर रहते हैं. बीच में रहने की आदत ही नहीं बनी. दूसरी दुखद बात यह है कि हमने किताबों के संसार को कभी देखा ही नहीं और इसीलिये उसकी ताकत का अंदाजा भी नहीं लगाया. नीलेश, मैं समझता हुँ किताबें हमारी बहुत अच्छी दोस्त हैं और बढ़िया टीचर भी. प्रशिक्षणों, कार्यशालाओं और बैठकों में भी बहुत कुछ सीखने-जानने को मिलता है किन्तु हम अपनी छोटी-छोटी समस्याओं के लिये उनका इंतजार नहीं कर सकते. यदि मेरी बात ठीक लगे तो धीरे-धीरे गणित की किताबों को एक बार पूरा पढ़ लो. यकीन मानो इतनी सारी नई बातें मिलेंगी कि तुम्हें आश्चर्य होगा.

और हाँ, यह विश्वास रखना कि तुम एक अच्छे शिक्षक हो. छोटी-छोटी असफलाताएँ तुम्हारा रास्ता नहीं रोक सकतीं, इतना संकेत जरूर करती हैं कि रास्ता बदलने की जरूरत है. तो कुछ-कुछ नया करो अच्छा लगेगा.

चिठ्ठी लिखना. तुम्हारी चिठ्ठियाँ मुझे अच्छी लगती हैं.

तुम्हारा ही
सुधीर

दार भात केंद्र

रचनाकार- रत्ना गुप्ता

रात दिन होथे शिक्षक मन के प्रशिक्षण
शिक्षक मन के प्रशिक्षण लेहे ले
लईकामन के बुद्धि कैसे बाढ़ही
का ददा के पढ़ाई करे ले
लईका मन ह परीक्षा मा बाजी मारही.
शिक्षा के मंदिर ला बना देहे
दार भात के ठिकाना.
लईकन पढ़ई के बेरा मा करते
पाखाना जाये के बहाना.
छुट्टी देबे त गड़बड़ हे
अऊ नई देबे त ज्यादा गड़बड़ हे.
खाना तो खवाय हन
त छुट्टी त देहे ल पढ़ही
छुट्टी नई देबे त पूरा कक्षा ल प्रदूषित करही.
अब तो स्कूल मा अतके बुता होवत हे
खा पी अउ पाखाना जा.
खेले कूदे बर स्कूल जा

मोर सरकार ले अतके विनती हे
खाए पिये के जिम्मेदारी ला
दाई ददा ला निभावन दव
अउ स्कूल आये शिक्षक मन ला
पुस्तक ल पढ़ावन दव,
पढ़ावन दव, पढ़ावन दव.

नदियाँ

रचनाकार-कन्हैया साहू 'अमित'

कलकल बहती जाती नदियाँ.
जानें बीतीं कितनी सदियाँ..

मीठा जल भरकर ये लातीं.
जनजीवन खुशहाल बनातीं..

और बाढ़ जब-जब भी आए.
मिट्टी को उपजाऊ बनाए..

मिलता सबको निर्मल पानी.
नदियों से ही है जिनगानी..

अति उपयोगी जल की धारा.
जीव जंतु का यही सहारा..

मेरा परिवार

रचनाकार- व्यग्र पाण्डे, गंगापुर

खुशियों से भरा है मेरा प्यारा परिवार,
मिल-जुलकर करते सब सपनों को साकार.
दादा-दादी हमको किस्से हैं सुनाते,
मम्मी-पापा हमको संस्कार हैं सीखाते.
दीदी-भैय्या के साथ खेल खेलते मजेदार,
मुझे प्यारा लगता मेरा ये छोटा-सा संसार.
खुशियों से भरा है मेरा प्यारा परिवार,
मिलजुलकर करते सब सपनों को साकार.
एकता की ताकत परिवार में है पाते,
प्रेम और विश्वास से संबंधों को निभाते.
सम्मान और आदर सब रिश्तों का आधार.
खुशियों से भरा है मेरा प्यारा परिवार,
मिलजुलकर करते सब सपनों को साकार.

बापू

रचनाकार- नेमेन्द्र कुमार गजेन्द्र

वो बापू गाँधी, जउँहर आँधी,
गोरा आगू, ठाड़ खड़े.
नित सत्याग्रह कर, धीरज मन धर,
आजादी बर, लाल लड़े..
खादी धोती तन, निचट सरल मन,
सत रद्दा मा, रोज चले.
चरखा ल चलाके, सब ल बताये,
घर के देशी, जिनिस भले..

एक कहानी मेरी जुबानी

लेखक- टी सी जायसवाल

श्री सुनील ध्रुव जी बलौदाबाजार जिले के बिटकुली गाँव का एक दिव्यांग बेरोजगार नवयुवक है. जिनके दोनों हाथ नही है.उन्होंने बी.ए. स्नातक तक की शिक्षा ग्रहण किया हैं.वे अपने पैरो से ही लिखते हैं. सुनील जी लॉक डाउन के पहले एक कंपनी में ऑपरेटर का काम करते थे. अन्य लोगों के साथ उनका भी काम बंद हो गया जिसके कारण उन्हें घर पर ही रहना उनकी मजबूरी हो गई.रोजगार जाने से चिंतित सुनील ने मन में कुछ अलग करने की ठानी और कोरोना काल में स्कूल बंद होने से अपने गाँव के बच्चों को व्यर्थ घूमते देख पढ़ाई के महत्व को समझते हुए उन्हीने अपने इस कठिन समय को चुनौती मानते हुए अवसर में बदलने का संकल्प लिया. वे रोज आपने गाँव के बच्चों को एक जगह एकत्रित कर स्वेच्छा से पारा मोहल्ला क्लास ले रहे हैं. इनके क्लास में नियमित रुप से बच्चे आते हैं. सुनील अपनी कक्षा में पढ़ाई के साथ बच्चों को गणित की संक्रियाओं को सहज ढंग से सिखाते है. आज के इस समय में उनकी दृढ़संकल्प, इच्छाशक्ति के कारण व स्वयं अपने पैरो पर खड़े होकर पूरे समाज को एक प्रेरणा और एक संदेश दे रहे है. सुनील अपना काम स्वयं करते है जैसे खाना बनाना आदि. उन्होंने अपनी शारीरिक कमजोरी को कभी खुद पर हावी नहीं होने दिया व अपने गाँव के सुविधा विहीन बच्चो के लिए एक आदर्श बनकर अपनी सेवा दे रहे हैं. श्री सुनील जी अदभुत,अदम्य इच्छाशक्ति उत्साह और साहस के परिचायक हैं.

मैं सुनील जी के इस प्रेरणादायक प्रयास व उनके हौसले को सलाम करता हूँ.

लौट आओ पापा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

उंगली पकड़ के चलना, आपने मुझे सिखाया.
छोटी सी चोट लगने पर, आपने मुझे उठाया..
खेल खेल में, पढ़ना-लिखना सिखाया.
हर परेशानियों का, सामना करना सिखाया..

कहाँ खो गए पापा आप.
इतनी भी क्या जल्दी थी, दूर जाने की पापा..

बहुत कुछ बचा है, आपसे ज्ञान पाने को पापा.
मेरी हर गलती को माफ कौन करेगा?
मेरी हर ख्वाहिश पूरी कौन करेगा?
कदम से कदम मिलाकर चलना कौन सिखाएगा..

बेटी-बेटा एक समान, कभी फर्क नही कराया.
क्यों चले गए इतने दूर हमसे पापा..
कहाँ खो गए पापा आप.
जल्दी से लौट आओ न पापा..

अपना भारत

रचनाकार-गोविन्द भारद्वाज, अजमेर राजस्थान

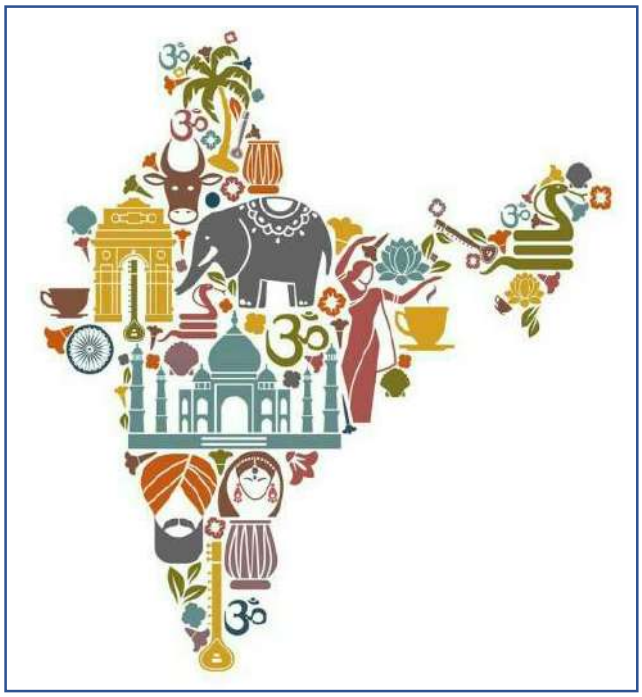

खुशियों-भरा ख़जाना भारत,
कुदरत का नज़राना भारत.

हरे-भरे हैं खेत-खलिहान,
लगता बड़ा सुहाना भारत.

निज वीर जवानों की खातिर,
गाता मस्त तराना भारत.

सदियों से सारी दुनियां में,
है जाना-पहचाना भारत.

कहीं घूम लें हम जग भर में,
अपना एक ठिकाना भारत.

सभ्यता कई जन्मीं हों पर,
अपना बड़ा पुराना भारत.

विश्व विजय निज हुआ तिरंगा,
इसका मान बढ़ाता भारत.

मिले ताल से ताल धरा पर,
आगे कदम बढ़ाता भारत.

सबका साथ, सभी का विकास,
वादा यही निभाता भारत.

दुश्मन जब भी ललकारे तो,
उससे आंख मिलाता भारत.

दिन सोमवार

रचनाकार- उषा साहू

सूरज की लालिमा में जगो
करो स्नान ध्यान और प्रणाम
ताजा भोजन रखो खानपान
ये सब जतन करो तमाम
स्कूल हमारा सबसे प्यारा जहांन
दोस्तो को यही समझता हूं
हमे नही बनना है किसान
पढ़ लिख कर बनाना है महान
लड़का लड़की एक समान
मिलजुल कर करो अच्छा काम
पढ़लिखकर बनो गांधी जी समान
घूमना फिरना नही आता काम
शिक्षा कीर्णित प्रकाश समान
जीवन मे लाये नये मुकाम
माता-पिता शिक्षक करो प्रणाम
ये देश मे होते सबसे महान
पढ़लिख कर करो माता-पिता
का पुरी दुनिया मे रोशन नाम

रोटी

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

बड़ मिहनत मा आथे रोटी.
सबके भूख भगाथे रोटी.

चाँवल, गहूँ, जुवार, बाजरा,
ले सुग्घर बन जाथे रोटी.

चीला, फरा अउ अंगाकर,
बन के गजब सुहाथे रोटी.

अमरित जइसे सुख मा होथे
दुख मा बड़ रोवाथे रोटी.

पेट भरे हे भाये नाहीं
भूख म तो ललचाथे रोटी.

हृदय परिवर्तन

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

बहुत पुरानी बात है. सिर्रीगढ़ में चंद्रवंशी राजा शशांक का राज्य था. महाराज शशांकचंद्र एक वीर एवं प्रतापी राजा थे. उन्हें प्रजा से विशेष सहानुभूति थी. वह प्रजा के हर सुख-दुःख का ख्याल रखते थे. महारानी प्रभादेवी के विचार भी राजा के विचारों से मिलते थे. सृष्टि उनकी इकलौती पुत्री थी. राजकुमारी सृष्टि अत्यंत सुंदर व होनहार थी. सिर्रीगढ़ की प्रजा अपने योग्य राजा को बहुत चाहती थी. राज्य में किसी को कोई भय नहीं था. सभी ओर प्रेम व भाईचारा था.राजा की न्यायप्रियता के चलते अन्याय कहीं नहीं था. इस तरह सिर्रीगढ़ सुख-शांति से परिपूर्ण राज्य था.

महाराज शशांकचंद्र को आखेट करने का बहुत शौक था. वह अक्सर आखेट करने जंगल जाया करते थे. एक दिन राजा ने सैनिकों को जंगल जाने हेतु प्रबंध करने का आदेश दिया. राजा के आदेशानुसार सैनिक पूरी तैयारी से राजा के समक्ष उपस्थित हुए. महाराज शशांकचंद्र तीर-कमान लेकर रथ पर सवार हुए. उनके आदेश पर सैनिकों ने जंगल की राह पकड़ ली.

महल से जंगल की ओर प्रस्थान करते हुए रथ पर सवार राजा पर राजकुमारी सृष्टि की नजर पड़ी.वह दौड़ती हुई रथ के पास आई और उत्सुक होकर बोली- 'पिताजी... पिताजी...! आप कहाँ जा रहे हैं?'

'बेटी, मैं शिकार करने जंगल जा रहा हूँ. 'राजा ने मुस्कुराते हुए कहा. सृष्टि की आँखों में अपने पिता के साथ वन जाने की इच्छा झलक रही थी. राजकुमारी ने जंगल का नाम तो अवश्य सुना था, पर वह स्वयं कभी जंगल नहीं गई थी. महाराज शशांकचंद्र राजकुमारी से बोले- ' बेटी, तुम ऐसा क्यों पूछ रही हो? '

'पिताजी, आज मैं भी आपके साथ जाऊँगी. मैंनें अब तक जंगल नहीं देखा है.' राजकुमारी ने जवाब दिया.

' सृष्टि की बात सुनकर राजा बोले- 'नहीं... नहीं... बेटी! जंगल बहुत खतरनाक होता है. वहाँ हमेशा जंगली जानवरों से खतरा बना रहता है. बेटी, तुम महल में अपनी माताजी के पास जाओ. मैं शीघ्र ही वापस आऊँगा.'

लेकिन राजकुमारी अपनी बात पर अड़ी रही; राजा उसे मनाने लगे. आज सृष्टि ने वन जाने को ठान ही ली थी.अंततः राजकुमारी का पिता के साथ जंगल जाना तय हो गया. रथ जंगल की ओर बढ़ने लगा.राजा और राजकुमारी घने जंगल में जा पहुँचे.काफी देर तलाश के पश्चात राजा को एक हिरणी दिखाई दी. हिरणी अपने छौने के साथ थी. यह देखकर राजा खुश हो गए; और हिरणी की ओर बढ़ने लगे. रथ को अपनी ओर आता देख हिरणी डर गई और अपने छौने के साथ भागने लगी. अब आगे-आगे अपने छौने के साथ हिरणी और पीछे-पीछे राजा. राजा ने निशाना साधकर तीर छोड़ा,पर तीर हिरणी को न लगकर छौने के पैर पर जा लगा. तीर लगते ही छौना जमीन पर गिर पड़ा और छटपटाने लगा. अपने घायल छौने को छटपटाते देखकर हिरणी भी व्याकुल हो गई.

छटपटाते छौने व व्याकुल हिरणी को देखकर राजकुमारी का हृदय करुणा से भर गया. उसे अपने पिता के किये पर बहुत गुस्सा आ रहा था. बोली- 'पिताजी! यह आपने क्या किया?' राजा मुस्कुराते हुए बोले- 'देखो बेटी, मेरे एक ही तीर से छौना ढेर हो गया.' राजकुमारी बोली- 'यह आपने अच्छा नहीं किया पिताजी?'

'क्यों बेटी?' राजा ने पूछा.

'पिताजी! यदि उस छौने के स्थान पर मैं और हिरणी के स्थान पर आप होते तो आपको कैसा लगता?' राजकुमारी सृष्टि की बात सुनकर राजा अवाक हो गए.

राजकुमारी ने फिर कहा- 'पिताजी! आप इसीलिए जंगल आते हैं मूक व निर्दोष पशुओं को मारने. यह तो अपराध है पिताजी. एक वीर व प्रतापी राजा का क्या यही लक्षण है? उस असहाय छौने का अब क्या होगा... उसकी माँ के हृदय पर क्या बीत रही होगी?'कहते हुए राजकुमारी सृष्टि रो पड़ी.

राजकुमारी की बातें सुनकर राजा की आँखें खुल गईं. आज उन्हें एक सबक मिला.महाराज ने राजकुमारी को गले लगाकर कसम खाई कि अब वह कभी निर्दोष वन्यजीवों का शिकार नहीं करेंगे.

भिंडी की सभा

रचनाकार- सतीश उपाध्याय

हरी-भरी ताजी कोमल सी
भिंडी ने एक सभा बुलाई.

कद्दू टिंडा झटपट पहुंचे
पीछे से लौकी भी आई.

डोढका और करेला आए
आई फिर भाजी चौलाई.

शिमला वाली मिर्ची आकर
देखो फूली नहीं समाई.

मूली, खीरा, गाजर, नीबू
संग-संग पड़े दिखाई

साथ देखकर ककड़ी चीखी
रुक जा- रुक जा मेरे भाई.

और खुरदुरा कटहल आ धमका
फुलवा गोभी भी है आई.

मटर छुपा-छुपा सा आया
ले अपनी हरी रजाई.

कुदरू घुंघरू बांधे आया
अदरक नाचे छपक- छाई.

लहसुन को ले बैगन थिरका.
सेमी ने फूंकी शहनाई

बथुआ की बडी लाडली
पालक भाजी मुस्काई.

इधर सभा में ता ता थैया
और मंडी में राम दुहाई.

मेरा शहर अनोखा शहर

रचनाकार- डॉ शिप्रा बेग

मेरे शहर की बातें, कुछ खट्टी कुछ मीठी बातें,
कुछ जानी पहचानी बातें, कुछ अंजानी सी बातें.

यहाँ जीवन है एक लय में बहता,
कुछ ठहरता, सकुचाता और दौड़ता.

एक भीनी सी सुगंध मेरे शहर की है महकती,
जो पवन सी एक मन से, दूसरे मन है डोलती.

ऊँची-नीची मौजों पर हिचकोले खाता,
धीरज धरता, मंजिल को है तलाशता.

आगे बढ़ता मिसाल बना, मेरा अनोखा शहर,
अपने संकल्प से महानायक बना रायपुर शहर.

नन्हे साहसी बच्चों ने 70 साल की बुजुर्ग की बचाई जान

लेखक- खोरबाहरा राम साहू

राजनांदगाँव से लगे हुए ग्राम राजा भानपुरी में दो छोटे बच्चों ने अपनी जान पर खेलकर, अपनी सूझ-बूझ का परिचय देते हुए एक वृद्ध महिला को मरने से बचा लिया. सनद रहे कि जिस उम्र में बच्चे को खेल के सिवा किसी चीज की सुध-बुध नहीं रहती, वहीं पर इन दोनों बच्चों ने समय पर अपनी त्वरित बुद्धि का इस्तेमाल कर एक बहुत बड़ी अनहोनी को टाल दिया.

राजनांदगाँव से लगे हुये राजा भानपुरी की श्रीमती दुलौरिन बाई साहू जब खेत से बैल को लाने गई थी. तभी बैल अचानक आक्रामक हो उठा और अपने सींग से आक्रमण कर दिया, जिससे वृध्द महिला खून से लथ-पथ होकर ढेर हो गई. उनके नाभी, बगल और हाथ में गहरी चोट आ गई. खून से लथपथ महिला को देखकर नन्हे बच्चे कुमारी टोमेश्वरी पिता सन्तोष यादव एवं मीलू पिता दीनदयाल निर्मलकर ने सबसे पहले बैल को काबू में कर उसे भगाया, फिर महिला को सहारा देते हुये गाँव के नजदीक तक लाया, लेकिन एक बड़े नाला को पार नहीं कर पाया. कुमारी टोमेश्वरी उस महिला के पास ही सहारा दे रही थी और मीलू दौड़ते हुये महिला के घर में जाकर सारी बात की जानकारी दिया. सूचना पाकर जब घर के लोग गये तो महिला पूरी तरह खून से भीग चुकी थी. उनकी हालत देखकर उनका पोता वहीं चक्कर खाकर बेहोश हो गया. फिर भी वे दोनों बच्चे और आस-पास के लोग वृद्धा को घर तक लाये. बाद में महिला का ईलाज निजी अस्पताल में कराया गया. महिला का पोता नेत राम साहू ने बताया की यह घटना 8 तारीख को करीब 5:00 बजे हुआ. महिला को घर तक लाया गया एवं तुरंत

दुपहिया वाहन से ले जाकर निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया. फिलहाल महिला की स्थिति ठीक है.

छोटे-छोटे बच्चों के द्वारा मानवता का अलख जगाने वाले कार्य से गदगद होकर ग्राम पटेल श्री खेमचंद साहू जी समेत शिक्षक श्री खोरबाहरा राम साहू एवं श्री धनेश राम सिन्हा ने बच्चों एवं पीड़िता से तत्काल मुलाकात कर स्थिति को समझने का प्रयास किया.

बच्चे वास्तव में बहुत ही साहसिक कार्य किये हैं. यदि तत्काल बच्चों की मदद नहीं मिली होती तो महिला दम भी तोड़ सकती थी. दोनों बच्चे गाँव के ही शासकीय प्राथमिक शाला में कक्षा 3 री में पढ़ते हैं. दोनों ही बच्चे अपने सहपाठियों को हमेशा सहयोग करते हैं.

ग्राम पटेल श्री खेमचंद पटेल ने बच्चों की कि भूरी-भूरी प्रसंसा की है. उन्होंने बताया कि कोविड19 महामारी के कारण शाला बन्द की स्थिति में दोनों बच्चों के कार्यों को साहसिक कार्य बताया. दोनों अबोध बच्चों ने जीवन में हमेशा दूसरों की मदद करने के लिये प्रेरित किया गया.

एल्टाई राजनांदगाँव चैप्टर के अध्यक्ष श्री धनेश सिन्हा एवम उपाध्यक्ष श्री खोरबाहरा रस्म साहू ने बच्चों के साहसिक कार्य को देखते हुए उन्हें सम्मानित करने की बात कही है.

The lion and the Rabbit

Writer-Upanshu Sahu

Once upon a time, there lived a ferocious lion in the forest. It was a greedy lion and started killing animals in the forest indiscriminately. Seeing this, the animals gathered and decided to approach to the lion with the offer of one animal of each species volunteering itself to be eaten by the lion every day. So every day, it was the turn of one of the animals and in the end came the rabbits turn. The rabbits choose a old rabbit among them. The rabbit was wise and old. It took its own sweet time to go to the Lion. The Lion was getting impatient on not seeing any animal come by and swore to kill all animals the next day.

The rabbit then strode along to the Lion by sunset. The Lion was angry at him. But the wise rabbit was calm and slowly told the Lion that it was not his fault. He told the Lion that a group of rabbits were coming to him for the day when on the way, an angry Lion attacked them all and ate all rabbits but himself. Somehow, he escaped to reach safely, the rabbit said.

He said that the other Lion was challenging the supremacy of his Lordship the Lion. The Lion was naturally very enraged and asked to be taken to the location of the other Lion.

The wise rabbit agreed and led the Lion towards a deep well filled with water. Then he showed the Lion his reflection in the water of the well. The Lion was furious and started growling and naturally its image in the water, the other Lion, was also equally angry.

Then the Lion jumped into the water at the other Lion to attack it, and so lost its life in the well. Thus, the wise rabbit saved the forest and its inhabitants from the proud Lion.

MORAL: Wit is superior to brute force.

शिक्षा

रचनाकार- ज्योत्सना कुशवाहा

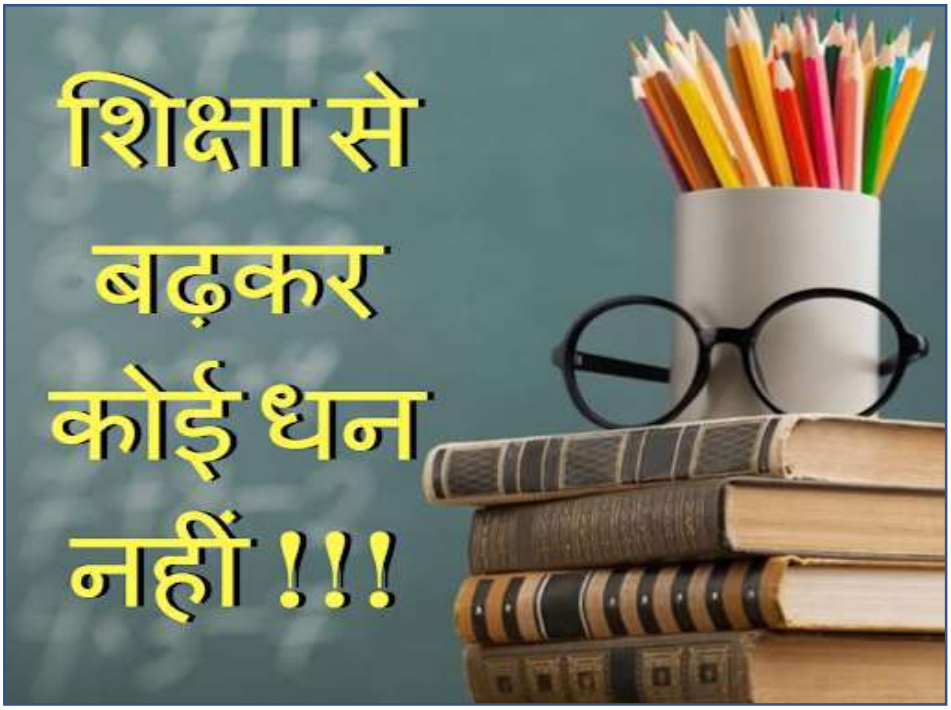

शिक्षा है अनमोल रतन,
तन, मन, धन से करो जतन.
शिक्षा का कभी होगा न पतन,
क्योंकि शिक्षा से ही बना है हमारा वतन..

शिक्षा ही राष्ट्र की जान है,
इससे ही हम सबकी पहचान है.
शिक्षा ही ज्ञान का स्रोत है,
इससे ही हमारी आन, बान, शान है.

शिक्षा सबसे सस्ती है,
फिर भी नही बिकती है.
शिक्षा से ही बनती महान हस्ती है,
यह ही अज्ञानियों की कश्ती हैं.

शिक्षा से ही शिक्षक की पहचान है,
शिक्षा ही बच्चों के लिय वरदान है.
अगर जीवन में शिक्षा नही तो,
यह सम्पूर्ण जीवन बेकार है..

पैड़ीगुंडा जलप्रपात

लेखक- संतोष कुमार तारक

इसे "बीजाकसा घूमर" भी कहा जाता है. दण्डक दल की टीम ने इस खूबसूरत जलप्रपात पर एक संक्षिप्त वीडियो बनाया है जो आपके सामने है. आपको जानकर हैरानी होगी कि चित्रकोट जलप्रपात के करीब होने के बावजूद यह प्रपात आज तक आम लोगों के लिए अज्ञात रहा है. लगभग 100 फिट की ऊंचाई से गिरता "लुदे नाला" का पानी यहां गर्जना लिए हुवे एक विशाल प्रपात का निर्माण करता है. यह ग्राम तिरथा से आगे ग्राम रतेंगा के जंगल में मौजूद है, जिस तक पहुँचने के लिए रतेंगा से 2 किलोमीटर पथरीले और दुर्गम रास्ते को तय करना होता है. जगदलपुर से इसकी दूरी 45 कि.मी. है. हमारी कोशिश है कि भविष्य में इस जलप्रपात तक एक सुगम पहुंँच मार्ग और अन्य आवश्यक मूलभूत सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध हों. हमारी टीम दण्डक दल बस्तर के छिपे हुए रहस्यों से पर्दा हटाने की कोशिश में लगातार प्रयत्नशील है.

पानी

रचनाकार- नेमेन्द्र कुमार गजेन्द्र

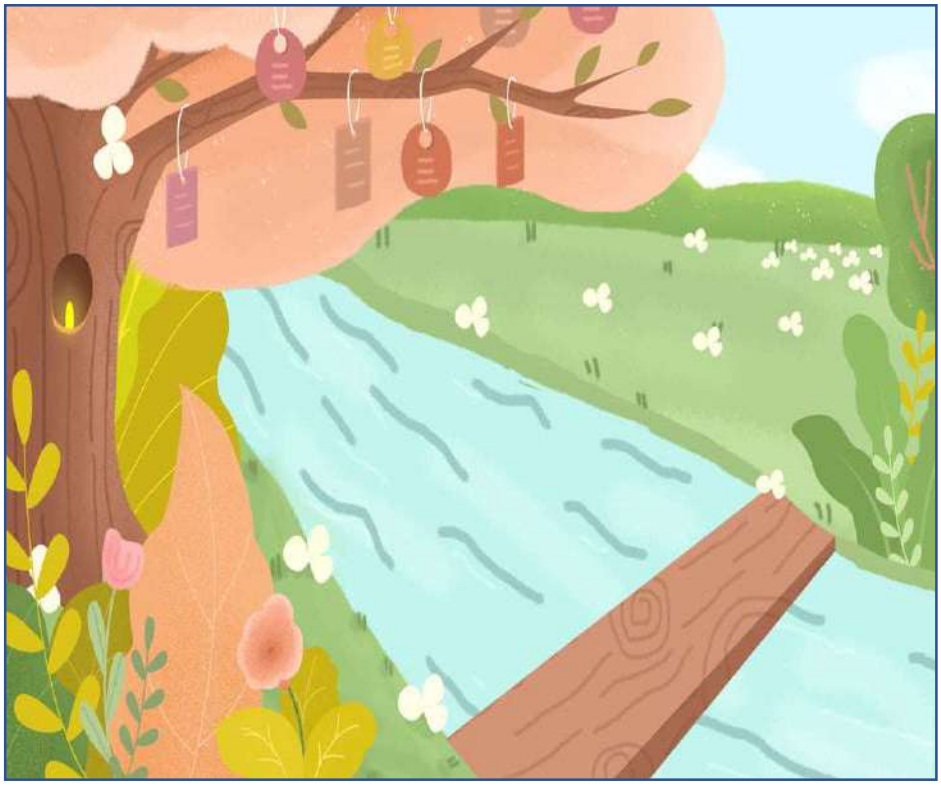

जीवन धारा पानी, अमरित धार.
ये जग मा इक पानी, हावय सार..

पानी पबरित गंगा, जइसे मान.
पानी के कीमत ला, लेवव जान..

धरती मा बस पानी, हावय मूल.
पानी के महिमा झन,जावव भूल..

जुड़े पेड़ ले पानी,पेड़ लगाव.
बरसा लाने बदरा, पेड़ बचाव..

पानी हे जिनगानी, मानौ बात.
बिन पानी के धरती, अँगरा तात..

बून्द बून्द के कीमत, लेवव जान.
भगवन लागे पानी, सौहत मान..

बरसा पानी राखव, लोग सकेल.

नइ जिनगी मा कबहू, होहू फेल..

चटपटे चने

रचनाकार- व्यग्र पाण्डे, गंगापुर

बच्चे आओ, बूढ़े आओ,
पहले आओ, पहले पाओ.
ले लो, ले लो, चने निराले,
धनिया मिर्च टमाटर डाले.
चटकारे संग जब खाओगे,
कई दिन भूल नहीं पाओगे.
गरम -गरम हैं, स्वादिष्ट हैं,
करें ना गड़बड़ भले शिष्ट हैं.
स्वाद संग शक्ति के दाता,
इन्हें बेच परिवार चलाता.
सस्ते हैं, रास्ते में खालों,
नमकीन का भ्रम ना पालों

हिन्दी

रचनाकार- योगेश ध्रुव "भीम"

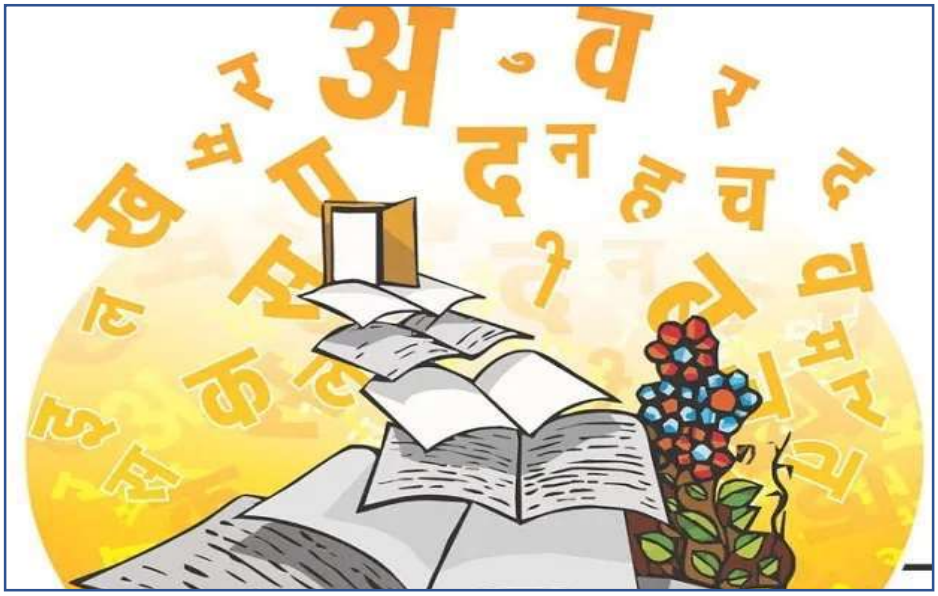

संस्कारो की ये भाषा,
भाल सजी है बिंदी,
माँ भारती की ये शान,
दिल की धड़कन हिन्दी..

कबीर मीरा तुलसी की,
हर पद में समाए हिन्दी,
हिन्दी पुत्र सम्राट मुंशी,
निशदिन मान बढ़ाए..

समरसता एकता की,
सभी को घूंट पिलाती,
जनगण मन सद्भावना,
ये नित सम्मान दिलाती..

रवि स है ओज तुम्हारी,
हे हिन्दी ! ये वसुंधरा में,
सौंदर्य आलंकारिक रूप,
व्याकरण मान बढ़ाती..

विश्व भ्रमण कर हर पल,
भारती गाती गौरव गाण,
मेरे रग में बसती, हिन्दी,
निज मान याद दिलाती..

टेक्नोलॉजी ने परखा है,
आज हिन्दी की गुणवत्ता,
ये गूगल की भाषा बनकर,
नित काज सुगम बनाती..

राम रहीम ईशा गुरुसाहेब,
ये हिन्दी की है चन्दन वंदन,
जनगण मन की भाषा बनकर,
नित सदमार्ग प्रशस्त कारती..

रोजी रोटी

रचनाकार- नीरज त्यागी

पति के गुजर जाने के बाद भी कमला ने घर-घर काम करके और जीवन भर लोगों की बात सुनते हुए जैसे-तैसे अपने इकलौते बेटे अमर को पढ़ाया. उसने कभी भी अमर को इस बात का एहसास नहीं होने दिया कि वह एक कामवाली का बेटा है. उसने रोटी कमाने के लिए दिन-रात एक कर दिया.सुबह से रात तक जगह-जगह काम करके जैसे तैसे वह अपने घर का खर्चा चलाती थी.लेकिन उसने कभी भी अमर को किसी भी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी.धीरे-धीरे अमर बड़ा हुआ. बचपन से ही अमर एक शरारती बच्चा था. उसने कभी भी यह महसूस ही नहीं किया कि उसकी माँ कितनी परेशान होकर अपना और उसका गुजारा चलाती है. कमला की जीवन भर की मेहनत रंग लायी और अमर ने अपनी ग्रेजुएशन तक की पढ़ाई पूरी की. पढ़ाई पूरी करने के बाद अब कमला को इस बात की तसल्ली थी. कि अब कुछ समय बाद उसका बेटा कामकाज पर लग जाएगा और उसके जीवन से दुखों का अंधियारा छट जाएगा.

अमर अपनी आदत के अनुसार बहुत ही लापरवाह था. लेकिन अब जब वह बड़ा हो गया था. तो कहीं ना कहीं नौकरी तो करनी ही थी. लेकिन अमर हमेशा नौकरी करने से बचते रहता था.पूरी उम्र प्यार से पला हुआ अमर आलसी हो चुका था. सुबह से शाम तक बाहर घूम कर आता था और अपनी माँ से कह देता नौकरी लग ही नही रही है. इस बीच कमला इतने घरों में काम कर चुकी थी. कि उसने अपनी जान पहचान से अपने बेटे को एक फैक्टरी में सुपरवाइजर की नौकरी पर लगवा ही दिया. अब अमर की मजबूरी थी कि वह नौकरी करे. लेकिन कामचोर अमर की काम करने में कोई भी रुचि नहीं थी.उसे पता था कि वह कुछ करें ना करें, उसे तो शाम को अपना आराम से रोटी मिल ही जाती है. फिर वह काम क्यों करे.

लगभग एक महीने बाद उसने अपनी माँ से कहाँ, माँ,नौकरी में मजा नहीं आ रहा.कभी दिन की तो कभी रात की ड्यूटी होती है. पेस्टिसाइड बनाने की फैक्ट्री में मैं सुबह से शाम तक परेशान ही रहता हूं.

कमला ने अमर से कहाँ, बेटा तुझे चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है. अभी मेरे नौकरी करने से हमारी रोजी-रोटी की व्यवस्था हो जाती है. तुम कोई और नौकरी ढूंढना शुरू कर दो. लगभग साल भर अमर का यह ड्रामा चलता रहा. वह कहीं भी टिक कर नौकरी करता ही नहीं था. कहीं कुछ परेशानी बता देता था और कहीं कुछ परेशानी बता देता था. एक दिन अमर घूमते-फिरते एक घर के सामने से गुजरा. वहां पर उसकी मां झाड़ू पोछे का काम करती थी. तपती धूप में अमर ने दूर से अपनी मां को कपड़े धोते हुए और झाड़ू पोछा करते हुए देखा. आज उसे पहली बार कुछ शर्मिंदगी महसूस हुई. तभी उस घर की मकान मालकिन बाहर निकल कर आई और उसने उसकी माँ से कहा, अरे कमला अब तो बेटा बड़ा हो गया है. बस अब कुछ दिनों बाद तो तुम्हारा संकट कट ही जाएगा. तभी कमला का दर्द उसकी आंखों से छलकने लगा, उसने कहां, मालकिन रोजी-रोटी की दौड़ में मेरा पूरा जीवन निकल गया और मैं जानती हूं मेरे बेटे का किसी भी काम में दिल नहीं लगता है. इस कारण हो वो रोज-रोज कोई ना कोई नाटक करता है.

लेकिन मैं उसकी माँ हूँ, मैं अब भी उसे कुछ नहीं कहूंगी, मुझे ऐसा लगता है मालकिन मेरी रोजी-रोटी कमाने की दौड़ जिंदगी भर चलती रहेगी. अमर दूर से यह बात सुन रहा था. शर्मिंदगी से उसका चेहरा झुक गया था. उस दिन के बाद अमर ने किसी भी नौकरी के लिए कोई भी बहाना नहीं बनाया और धीरे-धीरे लगभग एक साल बाद आज उसने अपनी मां से आकर बोला, मां अब रोजी-रोटी कमाने की जिम्मेदारी मेरी है. इसके लिए अब आपको किसी के भी झूठे बर्तन धोने की जरूरत नहीं है. कमला की आंखों में आज भी आंसू थे. लेकिन इस बार ये खुशी के आंसू थे. आखिर उसके बेटे को यह पता चल ही गया था कि रोटी कैसे कमाई जाती है.

पढई तुँहर दुवार

रचनाकार- डॉ आलोक साहू

मुड़ मा बइठे कोरोना ह
घबराये हावै संसार
छत्तीसगढ़ मा जनमे हे
गाँव मा पढ़ई तुँहर दुवार.

सबो ला चिंता हावै
कइसे पहाही अब दिन
सरहद मा तो दँवत हावै
मीठ लबरा मितान चीन.

पाकिस्तान बौखलाए हे
गजब के घात लगाए हे
हमरो सेना के जवान मन
मारे के कसम खाए हे.

जीवन के सरगम

रचनाकार- ज्योत्सना कुशवाहा

मैंने खिलती हुई कली से पूछा- क्या गा सकती हो गाना?
या यूँ ही खिलना सीखा खिलकर मुरझा जाना?

कहा कली ने-खिलना भी क्या गीत से कम है,
खिलाना और बिखरना ही जीवन का सरगम है.

मैंने फूल से पूछा- कैसे हँसते खिलते फल बन जाते,
इसके बाद न मिलते हँसकर.

कहा फूल नें- हँस-हँस कर हम हँसी लुटाएँ,
हमने तो इतना सीखा है हँसते-हँसते फल बन जाएं.

बहती हुई हवा से पूछा-बड़ी तेज रफ्तार तुम्हारी
रात-दिन चलती रहती हो कभी न थक कर हिम्मत हारी.

बोली हवा-जीवन है चलने का नाम,
सारे जग को खुशबू देती मुझको है आराम हराम.

मैंने सागर की सीपी से पूछा- रहती हो सागर में छिपकर,
कैसे मोती पा जाती हो जरा बताओगी कुछ इसपर?

बोली शीपी-सहकर थपेडे नापी सागर की गहराई,
लहरों के संग उछली कूदी, तब जाकर यह मोती पाई.

तितली

रचनाकार- पीयूष कश्यप, कक्षा पांचवी, प्रा. शाला गतौरा

कितनी चंचल होती तितली,
छूने से उड़ जातीतितली.
रंग बिरंगी पंख लेकर,
फूलों पर मंडराती तितली..

शिक्षा गीत

रचनाकार-स्नेहलता टोप्पो

गली मोहल्ला पारा-पारा
जगमग आस का दीप जले
ज्ञान भास्कर चमके नभ में
शिक्षा फिर से फूले-फले

बुल टू के बोल कहीं पर
कहीं गूंज है माइक की
कहीं वर्चुअल क्लास सुसज्जित
गूंज गुरूजी बाइक की
मिस कॉल करके यह लगता
जैसे गुरू हों पास खड़े
ज्ञान भास्कर चमके नभ में
शिक्षा फिर से फूले-फले

कोरोना है भीषण संकट
विकट स्थिति आयी है
वैकल्पिक शिक्षा से भरेगी
अशिक्षा की खाई है
लक्ष्य मिलेगा शनै:शनै: चल

हृदय का विश्वास कहे
ज्ञान भास्कर चमके नभ में
शिक्षा फिर से फूले-फले

संकट चाहे जैसे भी हो
हार नहीं हम मानेंगे
नव नीति की नींव बनेंगे
वक्त नहीं जाने देंगे
ज्ञान नीर से सींच बाल मन
पुलकित बाग सुवास बहे
ज्ञान भास्कर चमके नभ में
शिक्षा फिर से फूले-फले

सैनेटाइज़ कर हाथों को
दूरी रखकर बैठो पढ़ो
नाक,मुँह को ढको मास्क से
प्यारे बच्चों धीर धरो
आलोकित शाला फिर होंगी
सेहत प्रथम विभास रहे
ज्ञान भास्कर चमके नभ में
शिक्षा फिर से फूले-फले

शाला समुदाय की नई पहल

लेखक- पेश्वर राम यादव

मैनपुर के दूरस्थ वनांचल ग्राम गोना में कोरोना संकट काल में भी शिक्षक और शिक्षित युवक-युवतियाँ मिलकर ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं. शाला समुदाय की सक्रिय भागीदारी से नई इब़ारत लिखी जा रही है. स्मार्ट फोन की कमी के चलते विद्यार्थियों को ऑनलाइन क्लास का पर्याप्त लाभ नहीं मिलते देख ग्राम गोना के चिंतनशील युवक-युवतियों ने मिडिल स्कूल-गोना के नवाचारी शिक्षक श्री पेश्वर राम यादव की प्रेरणा से पढ़ाई को सही मायनों में द्वार-द्वार तक पहुचाने की ठानी है. इसके लिए स्मार्ट फोन धारक सरपंच सहित 7 युवक युवतियों की टीम बनाकर सर्वप्रथम ये अपने-अपने पारा-टोला के आस-पास के बच्चों को जोड़ने का कार्य किए. ये शिक्षित मोबाईल धारक एक निश्चित समय एंव निश्चित स्थान पर प्रतिदिन ऑनलाइन क्लास में जुड़कर उसकी विषय वस्तु को भली भांॅति समझते हैं. इसके पश्चात् उसी विषय का अध्यापन स्वेच्छा से समय निकालकर बच्चों को कराते हैं. इस तरह ये मोबाईल धारक साथी प्रतिदिन एक से दो घंटा बच्चों के शिक्षा के लिए अपना अमुल्यल समय और मोबाईल उपलब्ध करा रहे हैं. बच्चों के लिए यूट्यूब से उपलब्ध विषयवार प्रभावी शैक्षणिक गतिविधियों एवं स्वयं द्वारा तैयार की गई गतिविधियाँ,प्रभावी विडिओ, पढ़ाई तुहंर द्वार की वेबसाइट, ज्ञानवर्धक ऑडियो, शैक्षणिक एप्प्स, ऑनलाइन शैक्षणिक लिंक, होमवर्क, प्रश्नोतरी लेखन सामग्री को शाला समुदाय ग्रुप में साझा किया जाता है. जिसे मोबाईल धारक साथी अपने स्मार्ट

मोबाइल मे डाउनलोड कर बच्चों को उपलब्ध कराते हैं.गाँव के शिक्षित मोबाइल धारक द्वारा बच्चों के पढ़ाई के उल्लेखनीय कार्य से प्रेरित होकर ग्राम के सरपंच द्वारा बच्चों के लिए निःशुल्क पेन कॉपी प्रदाय किया गया.

नारा

शाला समुदाय में जन जागृति जगाना है,
ज्ञान की ज्योति गाँव में फैलाना है.

गुड़

रचनाकार- अल्का राठौर

कितना मीठा मीठा गुड़,
सेहत का खजाना गुड़.
देख के इसको मन ललचाये,
सर्दी खाँसी दूर भगाये..

हल्दी दूध का स्वाद बढ़ाये,
गले की खरास झट दूर भगाये.
खाँसी जुगाम में काढ़ा बनाओ,
अनेक बीमारियों को दूर भगाओ..

गुड़ का शिरा कितना भाता,
कई पकवान इससे बन जाता.
बच्चे- बूढ़े सब खाते गुड़,
भर भर थैला लाते गुड़..

शक्कर से अच्छा है गुड़,
शक्कर से मीठा है गुड़.
शक्कर छोड़ गुड़ तुम अपना लो,
उत्तम स्वास्थ्य का खजाना पा लो..

A pig and a Man

Writer- Kavita acharya

A man was traveling in a boat with his pig.
There was also a philosopher with other passengers in that boat.
The pig had never travelled in a boat before, so it was not feeling comfortable.
It was going up and down, not letting anyone sit in peace.
The boatman was troubled by this and was concerned that the boat would sink due to the panic of the passengers.
If the pig doesn't calm down it will drown the boat.
man was upset about situation, but could not find any way to calm pig.
philosopher watched all this and decided to help.
He said: "If you allow, I can make this pig as quiet as a house cat."
man immediately agreed.
philosopher, with help of two passengers, picked up pig and threw it into river.
pig started to swim desperately to stay afloat.
It was now dying and struggled for its life.
After some time, philosopher dragged pig back into boat.
pig was quiet and went and sat in a corner. man and all passengers were surprised at changed behaviour of pig.
man asked philosopher: "At first it was jumping up and down. Now it is sitting like a pet cat. Why?"
Philosopher said: "No one realizes misfortune of anon without tasting trouble. When I threw this pig into water, it understood power of water and usefulness of boat."

मेरी टीचर

रचनाकार- तमन्ना सूर्यवंशी, कक्षा पांचवी, प्रा. शाला गतौरा

टीचर मेरी अच्छी है,
जीवन का पाठ पढ़ाती है.
मुझको मां जैसी लगती है,
टीचर मेरी सच्ची है..

पेड़

रचनाकार- नेमेन्द्र कुमार गजेन्द्र

जड़ ले बाँधे माटी, धर के पेड़.
कटे कभू झन माटी, रोके मेड़..

पेड़ हरे जिनगानी,पेड़ बचाव.
दवा हवा फल पानी, मनवा पाव..

जुड़े पेड़ ले पानी,पेड़ लगाव.
पेड़ ह लाने बदरा, पेड़ बचाव..

पेड़ हरे गुण कारी, गुण के खान.
महिमा येकर भारी, दौ सनमान..

पेड़ धरा बर हावय, बड़ अनमोल.
झन रुपिया मा मनवा, कीमत तोल..

जनम मरन तक लकड़ी, रहिथे संग.
होत पेड़ के भइया, लकड़ी अंग..

पेड़ बड़ा हे दानी, देव समान.
संरक्षण कर येखर, कर लौ मान..

आओ हिंदी दिवस मनाएँ

लेखक- हेमन्त खुँटे

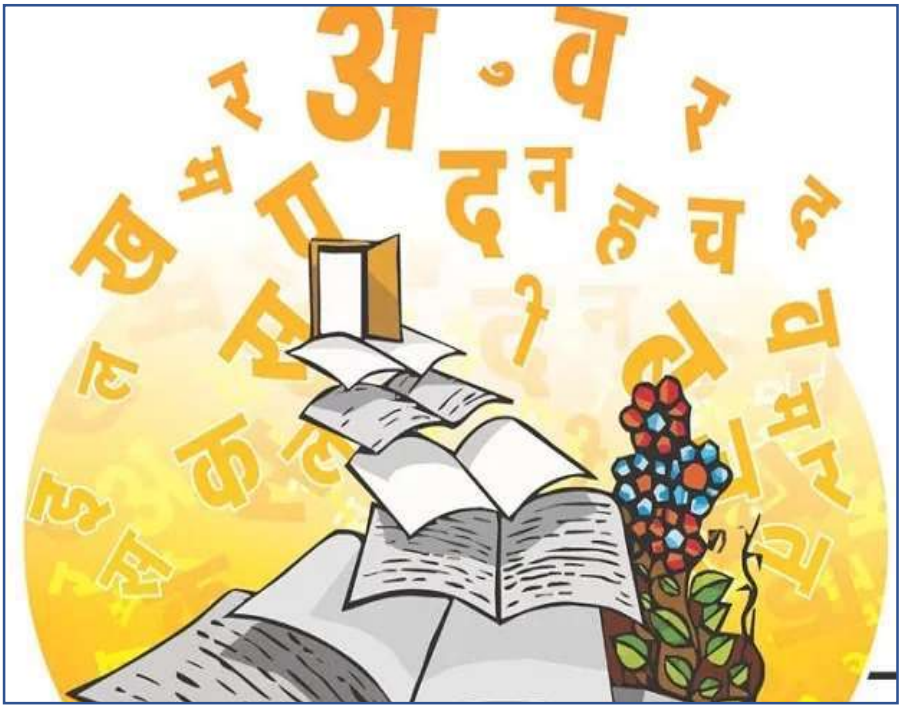

आओ मिलकर हम एक हो जाएँ,
खुशी से हिंदी दिवस मनाएँ.

पिथौरा 14 सितंबर हिंदी दिवस के अवसर पर एन. पी. स्मृति फाउंडेशन के संयोजन में हिंदी के प्रति सद्भावना विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया. परिचर्चा में विभिन्न

शैक्षणिक संस्थाओं के शिक्षाविद एवं साहित्यकारों ने हिस्सा लिया जिसमें सरोज कुमार वैष्णव, अंतर्यामी प्रधान, डोलामणी साहू, यशवंत चौधरी, शैलेंद्र कुमार नायक, डीगम साहू, लोरीश कुमार, मेघलता बंजारे, बीजु पटनायक, तबस्सुम व हेमन्त खुँटे शामिल हैं. परिचर्चा सत्र की शुरुआत करते हुए अपने स्वागत उद्बोधन व आधार वक्तव्य में मासिक खेल पत्रिका शतरंज सम्राट के कार्यकारी संपादक हेमन्त खुँटे ने हिंदी दिवस पर शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि आओ मिलकर हम एक हो जाएँ खुशी से हिंदी दिवस मनाएँ.

हिंदी दिवस के संदर्भ पर उन्होंने कहा कि हिंदी हमारे देश की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है.

14 सितंबर 1949 को हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था. हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने हिंदी को प्रतिष्ठा दिलाने के लिए हिंदी दिवस मनाने की परंपरा की शुरुआत की. परिचर्चा की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए फाउंडेशन के संस्थापक एवं शिक्षाविद बीजु पटनायक ने कहा कि हिंदी हमारे जीवन संस्कारों की भाषा है. जिसमें हमारा जीवन प्रतिबिंबित होता है. हिंदी का गरिमा और सम्मान इसलिए है क्योंकि यह सुबोध एवं सरल भाषा है. हिन्दी की प्रभावशीलता को कायम रखने के लिए यह आवश्यक है कि अपने दैनिक जीवन और विभिन्न क्रियाकलापों में हिंदी का अधिक से अधिक इस्तेमाल करें. सकारात्मक सोच के साथ अभिव्यक्ति कौशल के लिए रचनात्मक प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देवें एवं लेखन प्रतिभा के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करें जिससे हिंदी सुगमता से अभिव्यक्ति कौशल का माध्यम बन सके.

बरेकेल खुर्द स्कूल के प्रधान पाठक एवं साहित्यकार अंतर्यामी प्रधान ने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है इसलिए हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए. हिंदी भाषा में लेखन, हिंदी भाषा का पठन करके हम हिंदी भाषा के विकास में योगदान दे सकते हैं. नई पीढ़ी को भी हम हिंदी भाषा के प्रयोग के लिए जागरूक करें क्योंकि आज हिंदी की तुलना में अंग्रेजी भाषा के प्रति लोगों का रुझान एवं आकर्षण बढ़ रहा है. आज की सामाजिक स्थिति में हिंदी के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन करना है.

इसलिए हिंदी भाषा के विकास में लेखन कार्य के अलावा अन्य दैनिक कार्यों में भी हिंदी भाषा का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें तभी हमारी सद्भावना कारगर साबित होगी.

अंबिकापुर के शिक्षाविद एवं साहित्यकार सरोज कुमार वैष्णव ने कहा कि हिंदी भारत की समृद्ध भाषा है और हमारी संस्कृति व सभ्यता की आस्था है. हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित है जो वार्तालाप एवं जन सामान्य के बीच बोलचाल की एक कड़ी है. भारत में यद्यपि अनेक भाषाएँ विद्यमान हैं लेकिन साहित्य संपदा की दृष्टि से हिंदी सर्वोपरि स्थान रखती है.

सराईपाली के शिक्षक यशवंत चौधरी ने कहा कि हिंदी सरस एवं समावेशी भाषा के रूप में लोकप्रिय है. हिंदी हमारी अपनी भाषा है. नई शिक्षा नीति से हिंदी के विकास के प्रति असीम संभावना जगी है. भाषायी विकास के लिए हमें एक संकल्प के साथ हिंदी के लिए काम करना होगा.

प्राथमिक शाला परसापाली के शिक्षक डीगम साहू ने कहा कि हिंदी भाषा अपने देश की राष्ट्रीय धरोहर है जिससे राष्ट्र की पहचान व गौरव झलकता है. राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिए हिंदी भाषा का व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार होना चाहिए जिससे विश्व पटल पर हिंदीअपनी अलग पहचान बना सके.

लघुकथाकार एवं शिक्षिका तबस्सुम ने कहा कि हिंदी भारत में ही नहीं अपितु विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है. वैश्विक स्तर पर हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ है,इसके पीछे हमारे साहित्यकार एवं शिक्षकों का योगदान अमुल्य है. साहित्य लेखन निरंतर जारी रखें और अपनी अभिव्यक्ति के लिए हिंदी का चयन करें. यही हिंदी के प्रति हमारा समर्पण कहलाएगा. जगदीशपुर के साहित्यकार शिक्षक लोरीश कुमार ने कहा कि वर्तमान परिवेश में हिंदी के प्रति लोगों में रुचि तेजी से बढ़ी है. वैश्विक परिदृश्य में हिंदी के अध्येता एवं पाठक संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है. हिंदी बेहतर ढंग से बोली व समझने वाली मातृभाषा है. इसलिए लोगों को हिंदी के प्रति अनुराग एवं दिलचस्पी बढ़ी है. सोशल मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिन्दी शब्दावली का प्रयोग ज्यादातर होने लगा है.

सराईपाली के व्याख्याता शैलेंद्र कुमार नायक ने कहा कि मानव जीवन की सार्थकता का प्रमाण उसकी अपनी भाषा एवं वाणी होती है. मातृभाषा के रूप में हिंदी की पहचान बन चुकी है. भाषा के स्वरूप एवं विकास का यह प्रथम चरण है. हिंदी दिल को जोड़ने वाली भाषा है. इसलिए हिंदी की पहचान के लिए हम मिलकर काम करें और हिंदी भाषा को समृद्धि भाषा के रूप में सम्मान दिलाएं.

खुटेरी स्कूल के शिक्षक एवं साहित्यकार डोलामणी साहू ने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है. जो सम्मान हम मांॅ को देते हैं, वही सम्मान और प्रेम हिन्दी भाषा को दिया जाना चाहिए. हिंदी भाषा संस्कृतनिष्ठ भाषा है. इसलिए हिंदी के गहन अध्ययन एवं पठन की आवश्यकता है. हिंदी भाषा पर सदैव गर्व करना चाहिए तभी हिंदी दिवस की सार्थकता सिद्ध होगी.

रायपुर निमोरा की शिक्षिका मेघलता बंजारे ने कहा कि हिंदी हमारे भावों के विचारों को या अभिव्यक्ति को प्रकट करने की एक सरल भाषा है.हृदय की हार्दिक भावनाओं को व्यक्त करने में मातृभाषा उपयोगी साबित होती है. मातृभाषा का उपयोग करने से संतोष का अनुभव होता है. साहित्य, कला, दर्शन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हिंदी एक समृद्ध भाषा के रूप में विकसित हो चुकी है. हमारी मातृभूमि की पहचान हिंदी है और हमारे राष्ट्रभाषा की लिपि देवनागरी है. हिंदी के प्रति हमारा परम कर्तव्य कि हम भाषा के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाएँ और हिंदी भाषा के समुचित विकास के लिए निरंतर प्रयास करें.

हमारे बापू

रचनाकार- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

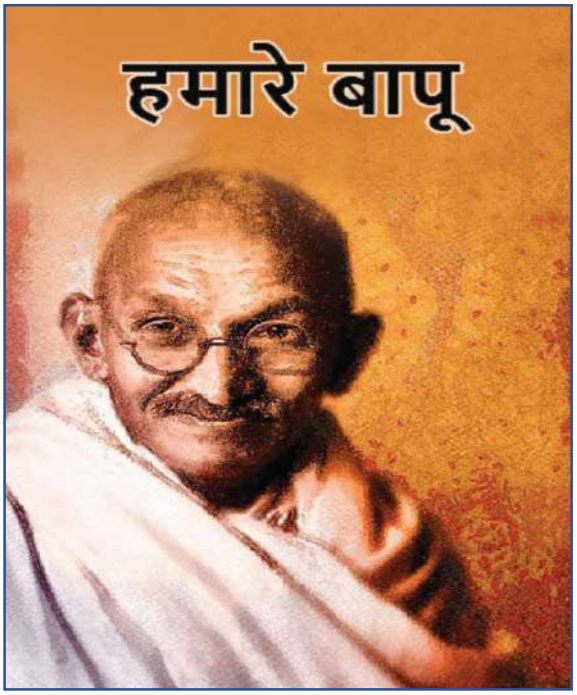

पूरे बदन पर केवल धोती,
हाथ में लाठी थी पहचान.
सत्य व अहिंसा के बल पर,
गांधी जी हुए बहुत महान..

दो अक्टूबर को जन्म लिए,
कस्तूरबा से विवाह किए.
दक्षिण अफ्रीका पढ़ने पहुँचे,
रंग भेद का सामना किए..

भारत की आजादी लाने को,
गांधी जी सर्वस्व त्याग किए.
दांडी तक बापू पैदल चलकर,
नमक के लिए सत्याग्रह किए..

जन जन के मन में गांधी जी,
आजादी की अलख जगाए थे.
स्वतंत्रता संग्राम के नायक थे,
प्यार से बापू कहलाए थे..

चरखा से वह सूत काटकर,
स्वदेशी आंदोलन चलाए थे.
रघुपति राघव राजाराम के,
मधुर भजन को गाए थे..

दुनिया में हमारे प्यारे बापू,
विरले ही ऐसे जन्म लिए.
सत्य व अहिंसा के बल पर,
अंग्रेज को देश से भगा दिए

कर लें मिल्ला मिल्ली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

चूहे से बोली बिल्ली,
तोड़ें शत्रुता पुरानी,
कर लें मिल्ला मिल्ली.

हँसकर चूहा बोला,
बात तुम्हारी अच्छी,
पर तुम हो बड़ी चिबिल्ली.

डॉगी तेरा दुश्मन,
कर ले उसी से पहले,
ओ बिल्ली मिल्ला मिल्ली.

देखी जब डॉगी बिल्ली,
तबियत उसकी थर्राई,
भागी झटपट वो दिल्ली.

गुरु पद पा जाते शिक्षक

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

हमको पाठ पढ़ाते शिक्षक
रास्ते नए बताते शिक्षक.

जहाँ कहीं मुश्किल आ जाती
हल उनका बतलाते शिक्षक.

सुबह-शाम बस चिंता करते
कभी नहीं अघाते शिक्षक.

फूल सरीखे ज्ञान बाँट कर
मान सभी से पाते शिक्षक.

अंधकार को पी जाते औ'
गुरु पद को पा जाते शिक्षक.

बाढ़

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

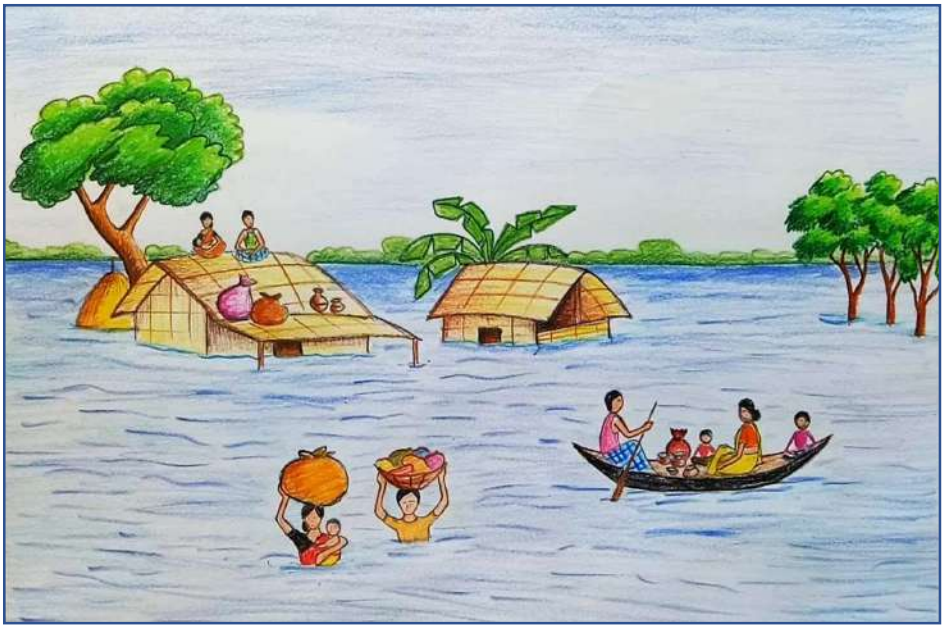

प्रकृति का यही नियम है कि हर साल सभी जगहों पर बारिश होती है.हर साल कहीं न कहीं बाढ़ जैसी समस्या उत्पन्न होती है. हर साल सुनने को मिलता है कि किसी का घर बाढ़ आने से बह गया. कहीं किसी के बच्चें बाढ़ आने से अपने - अपने माँ - बाप, भाई- बहन से बिछुड़ गए. अक्सर यही सब सुनने को मिलता है. मछुवारें लोग ज्यादा से ज्यादा नदी या समुद्र के किनारे घर या छोटी सी झोपड़ी बना के रहते हैं. तेज बारिश होने के कारण समुद्र में उफान आने के कारण बाढ़ में लोग बह जाते हैं.

बारिश होने का इंतजार सभी लोग करते हैं.लेकिन जरूरत से ज्यादा बारिश हर लोगों को चिंताग्रस्त कर देती है. (मैं एक छोटी सी कहानी अपने लेख के द्वारा आप सभी को बताना चाहती हूँ.)

जब से सावन लगा था तब से पानी का गिरना बंद हो गया था. मैं और मेरे पिता जी अक्सर कहा करते थे कि ये तो सावन नहीं गर्मी का दिन लग रहा है. बहुत ही धूप और गर्मी रहता था. सावन में कभी-कभी हल्का-हल्का ही बारिश होता था. सावन खत्म होने के बाद अगस्त के महीने की शुरुआत हुई. अच्छा खासा सभी का दिन निकल रहा था. कभी हल्की-हल्की बारिश की फुहार तो कभी ठंडी-ठंडी हवा तो कभी सौंधी-सौंधी माटी की सुगंध हमेशा मैं और मेरे पिता जी इसका आनंद लेते थे. जब भी बारिश होती दरवाजे पर जा कर खड़े हो जाते और बारिश

के पानी का मजा लेते थे. 16अगस्त का दिन था. सुबह-सुबह अचानक मेरे पिता जी की तबियत खराब होने लगी और हम सभी उनको अस्पताल ले कर गए. जब हम लोगों को पता चला कि पिता जी नहीं रहे उस दिन से लेकर आज तक बहुत बारिश हो रही है.मानो आसमान भी रो रहा है. ऐसा लग रहा है भगवान भी अपनी गलती पर अफ़सोस कर रहे हैं. माटी पुत्र को ले जाकर वह भी फूट-फूट कर रो रहे हैं. अपने परिवार और अपने बच्चों से दूर कर के भगवान भीआँसू बहा रहे हैं. यहाँ के आस-पास के गाँव-शहर, नदी- तालाब सभी जगहों पर बाढ़ आ गया है. पूरा गाँव-शहर पानी-पानी हो गया है.

रिश्तेदार

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

कई दिनों का भूखा अजगर.
पहुँचा सीधे चूहे के बिल द्वार..
कहा जोर से मौसा बाहर आना.
तुम्हारे लिए लाया चारा - दाना..
निडर होकर तुम खोलो द्वार.
मैं तो ठहरा तुम्हारा रिश्तेदार..
मौसा चूहा खतरा भाँप न पाया.
झट खोल किवाड़ बाहर आया..
झपट्टा मारकर ऐसा खाया.
मौसा चूहा कुछ बोल ना पाया..
चूहा खाकर अजगर अलसाया.
पेड़ पर लिपट जरा सुसताया..
मीठी बात सदैव संकट लाया.
जान संकट में अक्सर फसाया..

ठान लिए तो जीत है

रचनाकार- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

ठान लिए तो जीत है,
यदि डर गए तो हार.
दो शब्दों से जिंदगी का,
बदल जाए आकार..

एक बार यदि हार गए,
तब भी न छोड़ें मैदान.
दृढ़ निश्चय कर डटे रहें,
इक दिन होगा यशगान..

जीत अगर मिल गया,
हम न करें अभिमान.
नही तो दुर्गुण आ बसे,
खत्म हो जाए सम्मान..

धन दौलत पद प्रतिष्ठा से,
जीवन में मिलता है सुख.
जीवन में हो कोशिश मेरी,
न हो किसी को दुःख..

सच्चा सुख जीवन में मिले,
जब करना सीखें हम प्रीत.
रुपया पैसा यदि चला गया,
पर प्रीत न छोड़ता मीत..

झूठ, फ़रेब और कपट से,
कुछ ही दिन रहता नाम.
जीवन में सच व प्रीत का,
सदैव मिले हमें इनाम..

Rain and Earth

Poet- Tejesh Sahu.

Earth asked to rain one day,
"Why you fall every year to me,
And why you hides the sun ray?"
You have to reply to me!
Then rain replied to Earth's crust,
I every year fall to you,
To quench your thirst,
And every year I energize you.
I bring you greenery,
I bring you happiness,
What is the beautiful scenery,
And I keep humans free of stress.
I am only responsible,
For these green grasses,
Earth ! please tell me truth,
Don't you like the happiness around you.
Then Earth replied to the rain,
First, Thank you for quenching my thirst,
I want to communicate with anyone
And after talking with you I understood
Happiest and best season is "rainy season".

<u>महतारी भाखा</u>

रचनाकार- योगेश ध्रुव "भीम"

मोर छत्तीसगढ के बोली भाखा,
गुरतुर गुरतुर मोला अबड़ सुहाथे.

सुवा ददरिया रिलो कर्मा पंथी,
बन कोयली कस मैना बनके.

तोर कोरा के मयारू मीठ बोली,
सबो झन ल घलो गजब रिझाथे.

सरगुजिहा रयपुरहिया भाखा नोनी,
गोड़ी हल्बी सदरी मोरो अंतस भाथे.

तय हमर राज के हावस चिन्हारी दाई,
मोर मुड़ी के घलो सुघ्घर पागा बनके.

कोरिया ले बस्तर अउ जाथन नांदगांव,
सबो डहर बोलो संगी दुरुग अउ भेलाई.

महतारी भाखा अउ काज भाखा येहर बनहि,
सबो झन जुरमिलके बोलबो इहि ह मोर मान..

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

इस घटना को हुए करीब 35 साल गुजर गए किंतु आज भी वे सारे दृश्य मेरी आंखों में एकदम ताज़ा हैं. उस दिन स्टेशन पर बहुत ज़्यादा भीड़ तो नहीं थी पर ट्रेन में बैठने की जगह नहीं मिली थी. मैं लंबी बेंच के किनारे खड़ा रहा. हालांकि उस बेंच पर चार लोग ही बैठे थे पर मुझे उनसे जगह मांगना अच्छा नहीं लग रहा था. थोड़ी देर के बाद एक सज्जन को शायद मुझ पर दया आई. उन्होंने खिसककर थोड़ी जगह मुझे भी दे दी.

मैं कॉलेज में अपने भाई के एडमिशन के लिए शहर आया हुआ था. बड़ी कोशिशों के बाद भी उसे किसी कॉलेज में जगह नहीं मिल पाई थी. पिछले तीन-चार दिन इतनी कठिनाई भरे थे कि क्या कहूं. ना तो दिन में खाने का ठिकाना था ना रात में सोने का. मैं इन्हीं खयालों में डूबा हुआ था, मुझे आसपास की खबर ही नहीं थी.

अचानक मेरी निगाह सामने की सीट पर गई. मैंने देखा एक महिला बहुत बेचैनी से अपने सामानों में कुछ खोज रही थी. अगल-बगल बैठे लोगों ने पूछा, क्या हुआ. लगभग रोते हुए उस महिला ने बताया कि उसका पर्स नहीं दिख रहा है. ट्रेन में चढ़ते समय शायद किसी ने उसे निकाल लिया. वह काफी देर तक सीट के नीचे और इधर-उधर अपना पर्स ढूंढ़ती रही, इस उम्मीद में कि शायद कंपार्टमेंट में ही कहीं गिरा हो और मिल जाए. पर वह उसे कहीं नहीं मिला. वह आखिर थक-हार कर अपनी सीट पर बैठ गई. उसके आंसू थम नहीं रहे थे. उसके साथ एक छोटी बच्ची भी थी, लगभग डेढ़-दो साल की. महिला कभी उसे संभालती, कभी खुद

को. उसकी अब तक की बातचीत से पता चला कि उसके पर्स में उसके जेवर, पैसे, टिकट जैसी सभी चीज़ें थीं.

उसका दुख देखकर मुझे अपनी तकलीफें याद ही नहीं रहीं. आसपास के लोग उसके साथ बड़ी सहानुभूति दिखा रहे थे. जिस तरह लोग उस पर तरस खा रहे थे, पता नहीं क्यों यह बात मुझे अच्छी नहीं लग रही थी. इन खोखली सहानुभूतियों से आखिर होता भी क्या है.

अचानक वहां टीसी महोदय पहुंच गए. उन्होंने सभी से टिकट पूछना शुरू किया.

यशवंत कुमार चौधरी व्दारा पूरी की गई कहानी

जैसे ही टीसी आए, सबको लगने लगा कि अब क्या होगा इस महिला के साथ? सभी ने अपना-अपना टिकट दिखाया,पर वह महिला बेचैन होकर रोने लगी और उसने टीसी को पूरी घटना बताई.आसपास के लोगों ने भी टीसी से अनुरोध किया कि यह महिला सही कह रही है, इस पर दया कीजियेटीसी बहुत सज्जन थे पर ड्यूटी के पक्के निकले.वे अपनी ओर से ही महिला की फ़ाइन भरने लगे तभी मैंने अपना पर्स निकाला और फाइन के पैसे देने की पेशकश की.अब तोआसपास के लोग भी अपनी सहानुभूति जताते हुए सामूहिक रूप से सहयोग देने आगे आए. थोड़ी ही देर में महिला की फाइन के अलावा भी पर्याप्त रुपये जमा हो गए. महिला ने अब राहत की साँस ली और सबके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की. अपनी माँ को खुश देख बच्ची भी खुश हो गई.

तेजेश साहू व्दारा पूरी की गई कहानी

टीसी उस महिला के पास आए और उससे भी टिकट दिखाने कहा, उस महिला ने टीसी को अपनी समस्या बताने की कोशिश की परन्तु टीसी महोदय मानने को तैयार नहीं थे.वे तो टिकट दिखाने की रट लगा रहे थे.मैं यह सब सहन नहीं कर पाया और टीसी महोदय से गुजारिश की कि वे उस महिला को जाने दे परन्तु वे मानने को तैयार ही नहीं थे. तब मैंने उस महिला की टिकट के पैसे टीसी महोदय को दिए. उस महिला ने मेरा शुक्रिया अदा किया और मुझसे मेरा पता पूछने लगी ताकि वे मुझे मेरा पैसा वापस दे सके परन्तु मैंने उनसे पैसे लेने से मना कर दिया. उन्होंने पूछा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ? तो मैंने अपनी सारी समस्या उन्हें बताई. संयोग से वे एक अच्छे कॉलेज की प्रधाध्यापिका थी. उन्होंने कहा कि वे मेरे भाई का एडमिशन उनके कॉलेज में करवा सकती हैं. मेरी खुशी का ठिकाना न था. मैंने आवश्यक दस्तावेज उनके पास जमा कर दिए और मेरे भाई का एडमिशन उनके कॉलेज में हो गया. आज मेरा भाई एक बिजनेसमैन है. मैं भगवान का शुक्रिया अदा करता हूँ कि 35 वर्ष पूर्व जो घटना हुई थी वह एक संयोग ही था और वह महिला मेरे लिए देवी रूप मैं आई थीं.

संतोष कुमार कौशिक व्दारा पूरी की गई कहानी

रिश्ता इंसानियत का

टीसी ने सभी लोगों से टिकट दिखाने कहा. पर उस महिला का पर्स उसके जेवर, पैसे टिकट जैसे सभी चीजों सहित गुम हो गया. टीसी ने महिला के पास आकर टिकट दिखाने कहा, महिला ने टीसी से कहा-" सर मेरे पर्स में टिकट, जेवर, पैसे थे वह गुम हो गया है. मेरे पास टिकट नहीं है, मैं क्या करूँ मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है." उसकी बात सुनकर टीसी ने कड़े स्वर में कहा-"सब यही बहाना करते हैं, आपको बिना टिकट यात्रा करने के जुर्म में जेल जाना पड़ सकता है या आपको जुर्माना भरना पड़ेगा."

महिला ने सहायता की आशा में इधर-उधर देखा. अभी तक सहानुभूति दिखाने वाले लोग अब नजरें चुराने लगे थे. यह सब देखकर मैं अपने आपको रोक नहीं पाया. मैंने टीसी से नम्रतापूर्वक कहा-“वास्तव में उनका पर्स गुम हो गया है उसी पर्स में उनका टिकट था. इंसानियत के नाते उन्हें क्षमा कर दीजिए और उसे नियत जगह पर जाने दीजिए.” टीसी ने चिल्लाकर मुझसे कहा-“आप इंसानियत की बात कह रहे हो तो आप ही उसका जुर्माना भर दो.” मुझसे उस महिला की तकलीफ देखी नहीं गई और मैंने टीसी के पास जुर्माने की राशि जमा करा दी. उस महिला ने मुझे धन्यवाद दिया. मैं खुश था कि मैं किसी इंसान की विपत्ति में काम आ सका.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

बारिश का वह दिन

परसा टोली तीस-चालीस घरों की एक छोटी सी जंगली बस्ती थी जो एक टेकरी के ऊपर बसी थी. यहां के लोग जंगल की उपज इकट्ठी करते और थोड़ी फल-सब्जियां उगाते थे. परसा टोली के सबसे पास का गांव था कुंवरपुर. आसपास की सभी बस्तियों और टोलों के लोग जरूरत की चीजें यहीं से खरीदकर ले जाते थे. यहां एक छोटा सा अस्पताल, पोस्ट ऑफिस और एक हाई स्कूल भी था. स्कूल के सभी शिक्षक बहुत परिश्रमी और अपने काम के प्रति बहुत जागरूक थे.स्कूल के सभी बच्चे अपने इन शिक्षकों को बहुत चाहते थे और उनका सम्मान करते थे. यही कारण था कि स्कूल की उपस्थिति प्रायः शत-प्रतिशत रहती थी.

परसा टोली के लगभग पन्द्रह-सोलह बच्चे भी यहीं पढ़ने आते थे. परसा टोली और कुंवरपुर के बीच एक नाला पड़ता था. इसमें साल भर घुटनों तक पानी रहता ही था. एक बार दो दिनों तक लगातार बारिश होती रही. पहले दिन तो बच्चों ने किसी तरह नाला पार कर लिया. दूसरे दिन नाले में पानी कुछ ज्यादा बढ़ गया. जो बच्चे कुछ बड़े थे उन्होंने छोटे बच्चों को वापस घर भेज दिया और खुद तैर कर नाले को पार कर लिया. जब वे स्कूल पहुंचे तो गीले कपड़ों में उन्हें देखकर शिक्षकों ने समझाया कि ऐसी कठिन स्थितियों में वे स्कूल ना आया करें.

छुट्टी होने के बाद ये बच्चे जब घर लौट रहे थे, नाला उफान पर था. उसे देखकर बच्चों की हिम्मत जवाब दे गई. शाम हो चली थी. आसमान में घनी बदलियां छाई हुई थीं. धीरे-धीरे अंधेरा गहराने लगा था. बच्चे फंस चुके थे. वे वापस कुंवरपुर भी नहीं जा सकते थे और उफनते नाले को पार करना भी खतरे से खाली नहीं था.

अब इसके बाद क्या हुआ होगा, इसकी आप कल्पना कीजिए और कहानी पूरी कर हमें माह की 15 तारीख तक ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

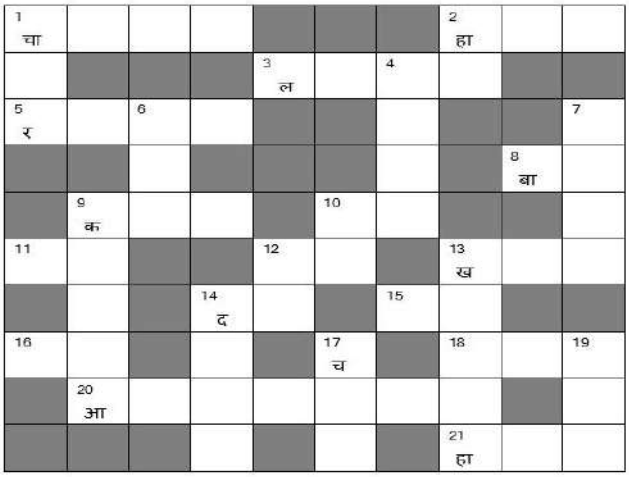

बाएँ से दाएँ:- 1. सार्वजनिक 2. है, उपलब्ध 3. बहुत परिश्रम से/ लेदे कर 5 धूप सेंकना 8. पारी 9. कमर 10. रुई 11. मत, नहीं 12. बिश्व प्रसिद्ध लोकनृत्य 13. कांख 14. मुरुम (मिट्टी) 15. खुला मैदान 16. और 18. खुजली 20. अनंत चतुर्दशी 21. हिलता

ऊपर से नीचे:- 1. चौड़ा 2. बाजार 4. बाराती स्वागत कार्यक्रम 6. सीढ़ी 7. बारम्बार 9. कान का मैल 10. पुस्तक 12. गोरा 13. खुरदुरा 14. भुक्खड़/खूब खाने वाला 17. चाँवल 19. रूठा

पिछले भाखा जनऊला के उत्तर

1 चा	र	या	री				2 हा	व	य
क				3 ल	ट	4 प	ट		
5 र	व	6 नि	या			र			7 घे
		से				घौ		8 बा	री
	9 क	नी	हा		10 पो	नी			बे
11 झ	न			12 पं	थी		13 ख	खो	री
	घ		14 द	री		15 खा	र		
16 अ	उ		र		17 च		18 ख	ज	19 री
	20 आ	नं	द	च	उ	द	स		सा
			हा		र		21 हा	ल	य